श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति, (अंतर्गत श्री अ.भा.सा. जैन संघ)
प्रधान कार्यालय – समता भवन, बीकानेर (राज.)

प्रबोधिनी

राम चमक रहे भानु समाना

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष - 1 | अंक-10 | 03 जुलाई, 2020 | आषाढ़ सुदी 2077

महावीर वाणी

न वि ता अहमेव लुप्पए, लुप्पन्ती लोगंसि पाणिणो।
एवं सहिएहि पासए, अनिहे से पुट्ठे हियासए।।

कष्ट तथा आपत्ति के आने पर ज्ञान-संपन्न पुरुष खेदरहित मन से इस प्रकार विचार करे कि कष्टों से मैं ही पीड़ित नहीं हूँ, किन्तु संसार में दूसरे भी दुखित हैं और जो कष्ट आये हैं, उन्हें शांतिपूर्वक सहन करें।

सुधा सार

आज मानव को विवश वृत्ति से ऊपर उठना है। उसे अपनी भावनाओं व धारणाओं का रूपान्तरण करके नई जागृति का संदेश गुंजायमान करना है कि वह शक्तिपुंज है, जिज्ञासा एवं इच्छाशक्ति का धनी है तथा अपने मन, वचन एवं कर्म को सन्नद्ध बनाकर असंभव कार्य को भी संभव बना सकता है।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

चाहे कैसी भी कठिनाइयाँ क्यों न आ जायें हम उससे विचलित नहीं होंगे। ऐसी भावना अपने भीतर दृढ़-सुदृढ़ बनानी चाहिये। यह भी ध्यान रहे सुविधा हमारी ऊर्जा-शक्तियों को लील लेती है, जबकि कठिनाई हमारे भीतर सुप्त शक्तियों को भी जागृत कर देती हैं। इसलिए कठिनाइयों से कभी मुँह नहीं मोड़ें, बल्कि उसकी चुनौतियों को स्वीकार करें।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

सम्पादक पाती....

समता सिंधु, आस्था बिंदु, मम आराध्य परम पूज्य श्री नानालालजी म.सा. का जन्म शताब्दी वर्ष आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के नेश्राय **'अनन्य महोत्सव'** के रूप में बड़े उल्लास के साथ मना रहा है। नानागुरु साधना की पगडंडी पर अविचल रूप से निर्भयता के साथ चलते रहे। गुरु चरणों मे सर्वतोभावेन समर्पित होकर आत्मिक मशाल को निरंतर प्रज्वलित करते रहे। आत्मिक शांति जागृत करने के लिये आगम सम्मत **'समीक्षण ध्यान साधना'** का अभिनव प्रयोग जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। जिनके प्रवचन आगमिक विवेचना के साथ विश्व की तत्कालीन समस्याओं का सचोट समाधान प्रस्तुत करते थे। एक साथ 25 दीक्षाएँ प्रदान कर 500 वर्षों पूर्व के इति विद्वद् शिरोमणि, जिन शासक प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक समीक्षण ध्यान योगी के श्री चरणों में मेरे भी कुछ भाव पुष्प अर्पित करना चाहती हूँ–

प्रबोधिनी महिला समिति के कर्तृत्व का आईना है, जिसके बिंब प्रतिबिंब क्रमश: अपनी अमिट छाप छोड़ते जायेंगे – ऐसा हमारा सतत् प्रयास रहेगा, इसी अनुशंसा के साथ प्रबोधिनी की ये प्रति आप सबको समर्पित है।

प्रबोधिनी प्रबुद्धता, प्रतिबद्धता, प्रगल्भता का पर्याय बने, इसी प्रयास में.....

–वीना नाहर

शताब्दी वर्ष पर 'अनन्य महोत्सव' के उपलक्ष्य में आचार्य श्री नानालालजी म.सा. को शब्दों से भावांजलि

हे युगदृष्टा ! हे योगीश्वर ! हे युग पुरुष!!
तुमने धो डाले हम भक्तों के सारे कल्मष।।

तुम तो थे गुणों के अथाह सागर हे प्रभो।
कैसे निर्मित करूं शब्द सेतु मैं विभो!!

जेठ सुदी द्वितीया का भास्कर और प्रखर हो उठा।
गोवर्धन से बाल सूर्य को पा और मुखर हो उठा।।

अणु-सा नन्हा, बड़ा प्यारा-सा नाम था **नाना**।
पर कितना विशाल, विराट व्यक्तित्व था जाना।।

एक दिवली सा दीप देदीप्यमान दिनकर बन गया।
साधुमार्गी संघ को समता सरिता से सरसब्ज कर गया।।

पीयूषवर्षिणी वाग्धारा में स्नात होता था जन-जन।
कमलवत् खिल जाता था सभी का तन-मन।।

वात्सल्य से ओत-प्रोत कुसुमादपि कोमल थे।
अनुशासन में रचे-पचे वज्रादपि कठोर थे।।

क्षमाशीलता का अमिय रस हमको पिला गये थे।
परीषहों का गरल स्वयं शिव बन पान किये थे।।

धर्मपालों के मसीहा थे तो महादेव थे निर्लोभिता, अनासक्ति के।
प्रभुता में लघुता थी, प्रतिकूलता में अनुकूलता, सम थे कथनी करनी के।।

गुणों का वर्णन करते-करते जिह्वा थकती नहीं, कलम रुकती नहीं।
राम जैसा अनमोल रत्न देकर जो कृपा की, जनमेदिनी भूल सकती नहीं।

जाने वाले को जाने के बाद भला कौन याद रखता है ?
पर सदी के ऐ महाचेता! तुम्हें भला कौन भूल सकता है ?

हे करुणा निधान! तुम्हारा स्मरण कर बरबस नीर बहता है!
वीना ये संघ **अनन्य महोत्सव** के रूप में प्रति पल याद करता हैं!!

-वीना नाहर, ब्यावर

राम उवाच

ब्रह्माक्षर

परिस्थितियों से बल बढ़ाएं–

अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियाँ हमें बल देने वाली होनी चाहिये। इसे यों ही भी कह सकते है कि उक्त परिस्थितियों से हम बल की वृद्धि करें। फसल को पकने में जैसे वर्षा व धूप दोनों अपेक्षित हैं, वैसे ही हमारे बल को बढ़ाने में अनुकूल एवं प्रतिकूल अवस्थाओं को स्थान मिलना चाहिये। यह तब संभव होगा जब हम दोनों को सहने में समर्थ हो जायं। परिस्थितियाँ आयेंगी तो ही हम उन्हें सहन कर पायेंगे। यदि परिस्थितियाँ आएं ही नहीं तो सहने का अभ्यास कैसे होगा? हम प्रकृति को देखें, उसमें ऋतुओं की व्यवस्था है। इन ऋतुओं से हमारी शक्ति का नुकसान नहीं होता अपितु हर तरह की अवस्थाओं को सहने का सामर्थ्य प्रकट होता है। यदि कोई एक ही ऋतु का अभ्यासी होगा तो दूसरी ऋतु उसे प्रभावित किये बिना नहीं रहेगी। दूसरी ऋतु कष्टप्रद लगेगी। यदि उसे सर्व ऋतु को सम रूप से सहने का अभ्यास होता तो कोई भी ऋतु उसे कष्टदायी नहीं होती। इसी प्रकार अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों को समझना चाहिये। जीना सीख लें तो वह भी अनुकूल बन जायेगी। परिस्थिति को मात्र परिस्थिति बने रहने दो। उसमें अनुकूल–प्रतिकूल वेदन को नष्ट करो। यानी कोई भी परिस्थिति न हमें अनुकूल लगे और न प्रतिकूल ही। हमें सब में जीना है, जी रहे हैं, जीयेंगे। अनुकूल परिस्थिति हमें सुखकर न लगे एवं प्रतिकूल परिस्थिति दु:खदायी न बने। यह सामर्थ्य दोनों प्रकार की परिस्थितियों को सहने से ही प्राप्त हो सकता है। इसलिए अनुकूलताएं–प्रतिकूलताएं हमारे बल को, सामर्थ्य को बढ़ाने वाली बनें। हम उनसे अपनी सामर्थ्य की वृद्धि करें। किसी भी परिस्थिति से परेशान न हों। सबको समान रूप से जीएं। जीना हमें है। कैसे जीएं, यह निर्णय भी हमको ही करना है। अच्छा यह है कि हम परिस्थितियों को दोष न दें। दोष उनमें नहीं है। दोष हमारी अवधारणा में है। हम अवधारणा को निर्दोष बनाएं, यही श्रेष्ठ है।

●●●

प्रेरक कथा

नकारात्मक या सकारात्मक दृष्टिकोण अपना अपना

एक महान लेखक अपने लेखन कक्ष में बैठा हुआ लिख रहा था। 1. पिछले साल मेरा आपरेशन हुआ और मेरा गॉलब्लैडर निकाल दिया गया। इस ऑपरेशन के कारण बहुत लंबे समय तक बिस्तर पर रहना पड़ा। 2. इसी साल मैं 60 वर्ष का हुआ और मेरी पसंदीदा नौकरी चली गयी। जब मैंने उस प्रकाशन संस्था को छोड़ा तब 30 साल हो गए थे मुझे उस कम्पनी में काम करते हुए। 3. इसी साल मुझे अपने पिता की मृत्यु का दु:ख भी झेलना पड़ा। 4. इसी साल मेरा बेटा कार एक्सिडेंट हो जाने के कारण मेडिकल की परीक्षा में फेल हो गया क्योंकि उसे बहुत दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ा। कार की टूट फूट का नुकसान अलग हुआ। अंत में लेखक ने लिखा, वह बहुत ही बुरा साल था।

जब लेखक की पत्नी लेखन कक्ष में आई तो उसने देखा कि, उसका पति बहुत दुखी लग रहा है और अपने ही विचारों में खोया हुआ है। अपने पति की कुर्सी के पीछे खड़े होकर उसने देखा और पढ़ा कि वो क्या लिख रहा था। वह चुपचाप कक्ष से बाहर गई और थोड़ी देर बाद एक दूसरे कागज के साथ वापस लौटी और वह कागज उसने अपने पति के लिखे हुए कागज के बगल में रख दिया। लेखक ने पत्नी के रखे कागज पर देखा तो उसे कुछ लिखा हुआ नजर आया, उसने पढ़ा।

1. पिछले साल आखिर मुझे उस गॉलब्लैडर से छुटकारा मिल गया जिसके कारण मैं कई सालों से दर्द से परेशान था। 2. इसी साल मैं 60 वर्ष का होकर स्वस्थ दुरूस्त अपनी प्रकाशन कम्पनी की नौकरी से सेवानिवृत्त हुआ। अब मैं पूरा ध्यान लगाकर शान्ति के साथ अपने समय का उपयोग और बढ़िया लिखने के लिए कर पाऊँगा। 3. इसी साल मेरे 95 वर्ष के पिता बगैर किसी पर आश्रित हुए और बिना गंभीर बीमार हुए परमात्मा के पास चले गए। 4. इसी साल भगवान् ने एक्सिडेंट में मेरे बेटे की रक्षा की। कार टूट फूट गई लेकिन मेरे बच्चे की जिंदगी बच गई। उसे नई जिंदगी तो मिली ही और हाथ पाँव भी सही सलामत हैं।

अंत में उसकी पत्नी ने लिखा था, इस साल भगवान की हम पर बहुत कृपा रही, साल अच्छा बीता। मानव–जीवन में प्रत्येक मनुष्य के समक्ष अनेकों परिस्थितियां आती हैं, उन परिस्थितियों का प्रभाव क्या और कितना पड़ेगा, यह पूरी तरह हमारे सोचने के तरीके पर निर्भर करता है। चीजें वही रहती हैं पर नजरिया बदलने से पूरा परिणाम बदल जाता है। सकारात्मक नजरिया जीवन बदल देता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी हमें कोरोना से घबराना नहीं है अपितु सुरक्षा नियमों व सरकारी निर्देशों का पालन करते हुए इसका डट कर मुकाबला करना हैं।

–संकलित

12 बोल आत्मघाती महापापी

1.	आत्मघाती	महापापी
2.	विश्वासघाती	महापापी
3.	गुरुद्रोही	महापापी
4.	कृतघ्नी	महापापी
5.	झूठी सलाह देने वाला	महापापी
6.	झूठी साक्षी देने वाला	महापापी
7.	हिंसा में धर्म बताने वाला	महापापी
8.	सरोवर की पाल तोड़ने वाला	महापापी
9.	वन में दव (अग्नि) लगाने वाला	महापापी
10.	हरा–भरा वन काटने वाला	महापापी
11.	बाल हत्या करने वाला	महापापी
12.	सती–साध्वी का शील भंग करने वाला	महापापी

१०बोल–दुर्लभ

1. मनुष्य जन्म मिलना दुर्लभ है।
2. आर्य क्षेत्र मिलना दुर्लभ है।
3. उत्तम कुल मिलना दुर्लभ है।
4. संपूर्ण इंद्रियाँ मिलनी दुर्लभ है।
5. लंबा आयुष्य मिलना दुर्लभ है।
6. रोग रहित काया मिलनी दुर्लभ है।
7. साधु का योग मिलना दुर्लभ है।
8. सूत्र सुनना दुर्लभ है।
9. श्रद्धा सहित समकित मिलनी दुर्लभ है।
10. धर्म के विषय पराक्रम मोड़ना दुर्लभ है।

चातुर्मास

महापुरुषों की अमृत वाणी सुनने का अवसर है–	–	चातुर्मास
जीवन का पावन परिवर्तन है	–	चातुर्मास
आत्मा की जागृति का अच्छा अवसर है	–	चातुर्मास
निज भान के परीक्षण का नाम है	–	चातुर्मास
जीव के स्वात्म अवलोकन का नाम है	–	चातुर्मास
शुद्धात्म भाव को प्रकट करने की ललक का सुअवसर है	–	चातुर्मास
आत्मा के अंधेरे को दूर करने का नाम है	–	चातुर्मास
ज्ञान रूपी प्रकाश को प्रकट करने का नाम है	–	चातुर्मास
आत्मा को नई राह दिखाने का नाम है	–	चातुर्मास
चिंतन की धारा में बहने का पावन अवसर है	–	चातुर्मास
विभाव को रोककर स्वभाव में रमने का नाम है	–	चातुर्मास
परमात्मा की ओर बढ़ने का पावन अवसर है	–	चातुर्मास
अंतर शक्ति को जगाने का नाम है	–	चातुर्मास
विनाशी से अविनाशी बनने की यात्रा का नाम है	–	चातुर्मास
साधना की गहराई में जाने का अवसर है	–	चातुर्मास
आत्म अनुभूति का स्पन्दन है	–	चातुर्मास
आत्म शुद्धि के सर्वश्रेष्ठ साधन का नाम है	–	चातुर्मास
इन्द्रियों को वश में करने का नाम है	–	चातुर्मास
कषायों पर विजय प्राप्त करने का नाम है	–	चातुर्मास
साधुओं का विशेष कल्प है	–	चातुर्मास
तप के द्वारा कर्म निर्जरा का अवसर है	–	चातुर्मास
स्व पर कल्याण की साधना मे बढ़ने का नाम है	–	चातुर्मास

पूरा विश्व अपनाए भारतीय संस्कृति

कोरोना शब्द के उच्चारण मात्र से भय, डर या दहशत क्यों होने लगती है? कोरोना भय का पर्यायवाची क्यों बनने लगा है? कोरोना विश्व में महामारी के रूप में फैलने लगा है। विशेषकर चीन, अमेरिका, इटली, ईरान आदि देशों में इसके कारण भयावह स्थिति बन चुकी है। विश्व के करीब 160 देशों को कोरोना के वायरस ने अपने चपेट में ले लिया है। चीन को इस वायरस ने पहले चपेट में लिया। चीन को इस वायरस की जननी भी कहा जा रहा है। सुबह-सुबह समाचार पत्र को हाथ में लेते ही पढ़ने को मिलता है, हर जगह केवल और केवल कोरोना का ही रोना। टी.वी. का बटन दबाते ही हर समाचार चैनल में इसी का लेखा जोखा मानों कान कोरोनामय बन जाता है। टी.वी. में समाचार देखकर आंखें भयभीत होने लगती हैं। कोरोना का भय आंखों के सामने घूमने लगता है। सावधानी, दिलासा, सतर्कता बरतने हेतु जनसाधारण को जागरूक बनाना, कोरोना के लक्षणों से अवगत कराना, समाचार पत्रों, टी.वी. व मीडिया का कर्तव्य है, धर्म है, दायित्व है। उसकी मैं सराहना करता हूं। लेकिन देश में जो स्वाभाविक डर, भय, दहशत का वातावरण बन गया है उससे निजात दिलवाना भी हर भारतीय का कर्तव्य है। हम सावधान तो अवश्य रहें लेकिन डरें नही, मुकाबला करें, सतर्क रहें। मुझे महसूस होता है कि सावधानी, सतर्कता के साथ जो डरावने परिदृश्य और भययुक्त वातावरण बन रहा है उसके कारण ऐसा लगता है मानो नींद में भी व्यक्ति कोरोना के साये में सो रहा है।

कोरोना का मैं संधिविच्छेद करने लगा। कोऱोना। मैं सोचने लगा आखिर किस को रोयें, क्यों रोयें, किसलिये रोयें, कब तक रोयें, किन-किन कारणों से रोना पड़ रहा है? इन सारे प्रश्नों के उत्तर खोजने में मैं उलझ गया। रोना, जिंदगी का सौभाग्य नही दुर्भाग्य है। मेरी आत्मा से अनायास यह आवाज आने लगी कि भारतीय संस्कृति की पवित्र धरोहर- अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रम्हचर्य, अपरिग्रह की रक्षा करो। भारतीय संस्कृति के प्राण में समाहित समता, सहिष्णुता, सहअस्तित्व की उदात्त भावना का सम्मान करो। जिन-जिन देशों ने खुलेआम अहिंसा का मजाक उड़ाया। सत्य, अहिंसा, अचौर्य, से अपना नाता तोड़ा। परिग्रह को ही जीवन की उपलब्धि माना, तथा भौतिकता की अंधी दौड़ में आंख रहते हुए भी अन्धे बनकर जिन्होनें जीओ और जीने दो के महामंत्र का उपहास किया, वे ही आज कोरोना के जनक बन गये है। भारत भी आज इनसे अछूता नही रह पा रहा है। धर्म निरपेक्षता का बाना ओढ़कर जिन्होनें संविधान की आत्मा से ही जीओ और जीने दो को अलग करने की कोशिश की वे ही आज कलियुग की निशानी बनकर सामने आ रहे हैं। यही कारण है कि प्रगति के महाद्वार में प्रवेश कर हम आज विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। जब भी हमने प्रकृति से छेड़छाड़ की है तभी से हम, प्राकृतिक विपदा, महामारी, अकालमौत, दुर्भिक्ष, भूकम्प, बाढ़, अकाल की चपेट में आने लगे हैं। पानी, अग्नि, पृथ्वी, हवा से ही हमारा जीवन चलता है। जब-जब हमने महाउपकारी तत्वों से छेड़छाड़ की है, कृतघ्न बनें हैं तब तब हमने विपदाओं को आमंत्रण दिया है।

अशुद्ध पानी आज अनेक बीमारियों की जननी बन गई है। कहावत भी है पानी पीओ छानकर, गुरू बनाओ जानकर। वैज्ञानिकों, स्वास्थ्य विशेषज्ञों, ऋषि मुनियों द्वारा पानी को छानकर पीने के उद्घोष के कारण आज व्यक्ति पानी तो छानकर पी रहा है लेकिन शराब, बीयर, गांजा पीते समय उसके ओंठ नही कांपते। मैंने अनुभव किया है कि महंगे बीयर, कीमती अंग्रेजी शराब, गांजा, तथा देशी शराब(ठर्रा) पीकर व्यक्ति अपने आप को ऊंची महफिल का सदस्य समझता है तथा अपने मूंछों पर हाथ फेरकर गर्व महसूस करता है। मेरा ध्यान पुन: कोरोना वायरस पर आकर टिक गया। साबुन से हाथ धोने, सेनेटाइजर का उपयोग करने, हाथ नही मिलाने, व्यक्ति से व्यक्ति दूरी बनाये रखने, छींकनें, खांसने पर रूमाल से मुंह ढकने, आंख, नाक, कान को ज्यादा नही छूने, मास्क लगाने की हिदायत दी जा रही है। पशु-पक्षियों जानवरों के मांस आदि के सेवन से बचने की सलाह भी दी जा रही है। धूम्रपान खांसी की जननी है इसे वर्जित करने का पैगाम दिया जा रहा है।

मुझे अपनी आँखों के सामने जैन मुनियों के दर्शन होने लगे। वे सदैव मुंह पर मुँहपत्ती लगाये रखते हैं। जो मुँहपत्ती को धागों से बांधकर नही लगाते वे भी हाथों में रखकर मुंह के सामने अवश्य लगाते हैं। मैं सोचने लगा कि मुख वस्त्रिका, मास्क का ही दूसरा रूप है। जैन साध्वियाँ, पुरूषों, तथा बालकों को स्पर्श नही करतीं और जैन साधु स्त्रियों ओर बालिकाओं को स्पर्श नही करते। कैसा अद्भुत विज्ञान है। महिला एवं पुरूषों का एक दूसरे का स्पर्श नही करना संसर्ग में नही आना भी कोरोना का संदेश है। काश व्यक्ति कोरोना की इस महामारी तक ब्रम्हचर्य का पालन करता, शील धर्म की रक्षा करता ! इससे वह वायरस के संक्रमण से स्वयं बच जाता है तथा दूसरो का भी बचाता। हाथ मिलाना तो भारतीय संस्कृति में है ही नही। हाथ जोड़कर नमस्ते, अभिवादन करना, राम-राम करना, जय जिनेन्द्र बोलना, हरे कृष्ण कहना, राधे-राधे कहना ही हमारी संस्कृति की पहचान है। भारत माता तो पुकारती है, हाथ नहीं दिल मिलाओ, मन मिलाओ, आत्मीयता का विस्तार करो। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में सब भाई-भाई।

पशुओं का क्रन्दन, रूदन, चीत्कार, तड़पन ही तो वायरस का मूल है। चीन और चमगादड़ की राशि मिलती है। चीन के चमगादड़ प्रेम ने पूरे विश्व को महामारी के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। व्यभिचार, डकैती, हत्या, अतिक्रमण, झूठ-फरेब, प्राणी वध यही तो मूल में विपदाओं के जनक हैं। भारत की संस्कृति में नारी पूजी जाती है, पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा में देवताओं का वास माना जाता है। शंकर जी सर्प को गले में धारण करते हैं, गणेश जी चूहे की सवारी करते हैं, लक्ष्मीजी का वाहन उल्लू माना जाता है, विद्या की देवी सरस्वती को हंस वाहिनी कहा जाता है, दुर्गाजी शेर की सवारी में पूजी जाती हैं। भगवान ऋषभ का चिन्ह वृषभ है। प्रभु परमात्मा का स्मरण-ध्यान तथा प्राणीमात्र, के प्रति अटूट प्रेम भारत की चिरकाल से विशेषता रही।

कोरोना की रोकथाम के लिये केन्द्र व राज्य शासन द्वारा उठाये गये कदमों की मैं सराहना करता हूं। प्रारंभ से शासन स्वयं जागरूक रहा और जनता को भी जागरूक, सतर्क, सावधान बने रहने का संदेश देता रहा। स्वास्थ्य जगत से जुड़े प्रत्येक चिकित्सक, कर्मचारी, अधिकारी, वायुसेवा के सिपहदारों, प्रशासन से जुड़े व्यक्तियों, कर्मचारियों, समाजसेवियों, स्वयंसेवकों, जनप्रतिनिधियों, पुलिस, सेना, मीडिया के अदम्य साहस सेवा व मनोबल को मैं प्रणाम करता हूं।

प्रभु से हम प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु यदि हम सत्य, अहिंसा, अचौर्य, अपरिग्रह के राह के पथिक (पूर्ण रूप से) नही बन सकें तो भी हमारी संवेदनशीलता को जीवन्त रखना। प्रभुजी हमें इन्सानियत का पहरेदार बनाये रखना। हे प्रभु प्राणीमात्र पर करूणा के भावों से हमें अनुरंजित रखना, अनुरंजित रखना।

– गौतम पारख

गुणशील समाज की उद्घोषणा

सच्चा विकास धन से नहीं सदाचार और चरित्र से है

– आचार्य श्री रामेश

पिपलियाकलां 24.5.2020। समता विभूति, समीक्षणध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक, स्मृतिशेष, आचार्य श्री नानेश के जन्म शताब्दी दिवस उन्हीं के पट्टधर, युगनिर्माता, युगपुरुष, निर्लिप्त, अध्यात्म योगी, जिनशासन प्रद्योतक, उत्कृष्ट क्रिया के धारी, परमागम रहस्यज्ञाता, प्रशान्तमना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं उपाध्याय-प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में धर्मध्यान, तप-त्याग, सामाजिक-स्वाध्याय आदि के साथ मनाया गया। लॉकडाउन के चलते सरकारी नियमों का पूर्णत: ध्यान रखा गया। तीन दिन चौबीस घंटा अखण्ड नवकार महामंत्र का जाप किया गया, जिसमें जैन-जैनेतर हिन्दू-मुस्लिम सभी ने भाग लेकर अपनी श्रद्धा-भक्ति का परिचय दिया। नानेश-रामेश चालीसा का पाठ किया गया। पी.जी. फॉइल्स की फैक्ट्री में सामाजिक दूरी का ध्यान रखते हुए जनता को आचार्य भगवन् ने जीवन निर्माणकारी अद्भुत प्रेरणा प्रदान की।

इस अवसर पर परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि हर आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है। परमात्म शक्ति के जागरण हेतु पुरुषार्थ की जरूरत है। हमारे सामर्थ्य व शक्ति को जागृत करना है। आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बनना है। महात्मा-परमात्म शक्तियों का जागरण करते हुए दूसरों को प्रतिबोध देते हैं। 29 वर्ष पूर्व पिपलियाकलां में नाना गुरु का चातुर्मास सम्पन्न हुआ था। आज उनका जन्म शताब्दी दिवस है। स्व-कल्याण के साथ-साथ जन-जन को जागृत करने का काम संत करते हैं। नाना गुरु ने मध्यप्रदेश में विचरण के दौरान बलाई जाति के लोगों, जिन्हें लोग अछूत समझते थे, उन्हें व्यसनमुक्त, सदाचारयुक्त जीवन जीने का संदेश दिया। उन्होंने अपने संदेश में प्राणीमात्र को अपनी आत्मा के समान समझने, भेदभाव नहीं करने की प्रेरणा दी। सारी सृष्टि की रक्षा का दायित्व मनुष्य पर है। सिर्फ अपना विकास ही नहीं सोचें। सच्चा विकास सदाचार एवं चारित्र से है। बलाई जाति के लोगों ने ललाट पर लगे अछूत के काले तिलक को हटाने की प्रार्थना आचार्य श्री नानेश से की। आचार्य श्री नानेश ने साढ़े तीन माह विचरण कर लगभग साढ़े सत्रह हजार लोगों को स्वयं के श्री मुख से शराब, मांस छुड़वाने के प्रत्याख्यान से एक नये युग का सूत्रपात किया। जिनकी संख्या आज एक लाख से ऊपर पहुँच गई है। शुभ प्रतिज्ञा से उनके घर का वातावरण बदल गया। आज के पावन प्रसंग पर सम्मानित जन एवं विभिन्न संस्थाओं में कार्यरत अधिकारी तथा कर्मचारी इत्यादि के जीवन को उच्च नैतिक बनाने का प्रयास किया जा रहा है। जो अपने जीवन को गुणों से, सुरभित बना दे वो गुणशील व्यक्तित्व कहलाता है। हम स्वयं सदाचारी बनें और अन्य लोगों को भी प्रेरणा दें, तो पूरा राष्ट्र सदाचारी बन जायेगा। मर्यादाएँ बंधन नहीं सुरक्षा कवच है। महात्मा गाँधी ने भी बचपन में संत बेचरदासजी से तीन प्रतिज्ञाएँ, ग्रहण की थी। व्यसन से तन, मन, धन की बर्बादी होती है और बीमारियाँ भी हो जाती हैं।

आचार्य भगवन् के आह्वान पर उपस्थित कर्मचारियों ने गुणशील नियम ग्रहण करने की भावना जाहिर की। लगभग 188 लोगों ने आचार्य भगवन् से गुणशील का शुभ नियम प्रतिज्ञा लेकर एक नये युग का सूत्रपात किया। आचार्य भगवन् ने ''होवे धर्म प्रचार प्यारे भारत में'' प्रेरणा गीत प्रस्तुत कर सबको आत्मविभोर कर दिया।

पी.जी.फॉइल्स के प्रमुख परम गुरुभक्त समाजसेवी श्री पंकज पी. शाह ने अपने भावोद्गार में कहा कि आज पिपलियाकलां के भाग्य खुल गये हैं। पूज्य गुरुदेव सिर्फ मेरे ही नहीं बल्कि सबके हैं। आज नैतिक समाज गुणशील की शुरुआत जो हुई है, उससे एक नया इतिहास बन गया है। कोरोना लॉकडाउन के कारण अननय महोत्सव के कार्यक्रम नहीं हो पाये हैं। अब बस श्री चरणों में यही निवेदन है कि वर्ष 2020 का चातुर्मास पिपलियाकलां को ही प्रदान करें। श्री महावीरजी जैन ने कहा कि आचार्य भगवन् से प्रेरणा लेकर जीवन में अच्छाइयों को आगे बढ़ाते रहें। महेश नाहटा ने अलौकिक महापुरुषों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। सलीम भाई ने आचार्य श्री नानेश-रामेश को दिव्य महापुरूष बताते हुए 2020 का चातुर्मास पिपलियाकलां में करने हेतु विनती प्रस्तुत की।

-महेश नाहटा

समता दर्शन के अनुपम व्याख्याकार: आचार्य श्री नानेश

''दुनिया क्या देख रही है इस पर विचार मत करो। तुम क्या देख रहे हो इस का विचार करो। इस काम से दुनिया क्या कहेगी यह न सोच कर मेरी पवित्र आत्मा क्या कहेगी यह सोचें।

ऐसा यथार्थ चिन्तन और मार्मिक उद्बोधन संसार के समस्त प्राणियों को देने वाले समता विभूति आगम पुरुष हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर स्व. आचार्य नानेश की जन्म शताब्दी उनके जीवन दर्शन को आर पार उद्घाटित करने वाली है। सम्पूर्ण प्राणी जगत के प्रति समत्व का मंत्र फूंककर उन्होंने सिद्ध किया कि प्राणी चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, चर हो या अचर, सबल हो या निर्बल सभी में चेतना है, शक्ति है। यदि इनमें से किसी भी प्रकार के प्राणियों का सन्तुलन गडबड़ाता है तो सारे संसार की स्थिति गड़बड़ा जाती है। समता का यह सिद्धान्त जब व्यवहार में फलित होता है तभी व्यक्ति जीने का सही आंनद पा सकता है।

जिस समता को आचार्य श्री नानेश ने पूर्णत: आत्मसात् किया और सर्वतोरूपेन जिया उसे शब्दांकित कर पाना कठिन है। परन्तु यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि समता दर्शन जीवन में आमूल चूल परिवर्तन करने वाला चिन्तन है। जहाँ समता है वहाँ विषमता टिक नहीं सकती। समता दर्शन विचारों में सद्भाव, हृदय में उत्साह, चेतना में आनन्दानुभूति और आत्मा में शांति की सरिता बहाने वाला अनूठा दर्शन है।

समता एक वैतरणी है जिसमें गोते लगाने से आत्मा के सारे कल्मष धुल जाते हैं। समता सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् के द्वार तक ले जाती है। जब तक जीवन में क्रोध और मान है ईर्ष्या व अंहकार है समता पनप ही नहीं सकती। समभाव की साधना जीवन की सबसे बड़ी तपस्या है। आचार्य श्री नानेश ने इस तप को साधा, गहराई तक पहुँचे और हमें भी साक्षात्कार कराने का प्रयत्न सदा करते रहे। आपने समता सिद्धांत की केवल व्याख्या ही नहीं अपने जीवन में प्रयोग भी किये इसीलिये वे समता विभूति व समता दर्शन प्रणेता बने।

आराध्य देव का पवित्र संदेश हमारे व्यवहार में आचरण में, खानपान में, जीवन में उतर जाये और आत्मा सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ बने यही समता का मूल मंत्र है।

– प्रतिभा तिलक राज सहलोत, निम्बाहेड़ा

गुरुकृपा से कसाईयों ने जीवन बदला

कोविड-19 के इस संक्रमण महामारी के काल में पूरे विश्व में अहिंसा के पथ का अनुसरण करने की आवश्यकता को स्वीकार कर लिया है। जीओ और जीने दो के संदेश वाहक भगवान महावीर की वाणी आज विश्व स्तर पर जयवंत हो उठी है। शाकाहार सदाचार का संदेश आज की आवश्यकता बन गई है। भगवान महावीर संदेशों के संदेश वाहक संस्था के सजग प्रहरी युग निर्माता नशामुक्ति के प्रेरक आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के दिव्य वाणी व प्रभावी प्रेरणा से अभिभूत होकर हिंसा का व्यवसाय करने वाले भी आज अहिंसा के पथिक बन गये हैं। उन्होंने जीव हिंसा, कसाई धंधा का व्यवसाय छोड़कर जीओ और जीने दो के संदेश को आत्मसात् कर लिया है। शाकाहार, योग, आयुर्वेद आज की जीवन की शैली का अंग बन गया है। इसलिये शाकाहार की आवश्यकता को आज अपनी जीवन शैली में अधिकांश लोग अपनाने लग गये हैं। **''शाकाहार से जीवन दान व्यसन मुक्ति से जन कल्याण''** ही आज मानवता का संदेश बन गया है। तो आइये हम सबइस जीवन शैली को अपनाये और औरों को भी इसी जीवन शैली में जीने की प्रेरणा दे। आचार्य नानेश जन्म शताब्दी महोत्सव के अंतर्गत आचार्य भगवन की पावन प्रेरणा से निम्न लोगों ने जीव हिंसा कसाई धंधा को छोड़कर एक नये युग का सूत्रपात किया है। इस जीव दया कार्य में समाज सेवी परम गुरू भक्त श्री पंकज जी शाह- पिपलियाकला, श्री पदम जी लोढा, मंत्री, पूर्व मंत्री श्री शांतिलाल जी सिंघवी आदि के नेतृत्व में आचार्य भगवन् के चातुर्मास की विनती हुई। अन्य कई त्याग प्रत्याख्यान हुये। दर्शन का भी तांता लगा रहा। 6 दिन तक यहां विराजना हुआ। साधुमार्गी जैन संघ पाली की सेवा सराहनीय रही। 26 अप्रैल को वी.बी कॉलोनी श्री छगनलाल जी लोढ़ा के निवास पर पधारना हुआ। 7 वे दिन धर्म का मेला रहा, 4-5 मई मनोरथ अपार्ट मे पाली, 5 मई को ग्रीन पार्क, 6 मई को जाडन, 8-9 मई को और 10-11 मई को सोजत रोड़, 13 मई को चण्डावल, 14 मई को परम गुरु भक्त श्री पंकज जी शाह के बंगले में पधारना हुआ। पी.जी फोइल्स, केवल नगरवासियों ने अगवानी की। 14 दिन तक यहां सुन्दर धार्मिक वातावरण बना रहा। 28 मई को रामपुरा कला, 29 मई को देवली कला, 30 मई को जैन स्थानक अटवड़ा, 31 मई को बरना, मांगीलाल जी देशब्रह्मा के निवास पर 1-2 जून को बिलाड़ा शांति भवन में, 3 जून को पिचियाक, 4 जून को सिलारी, 6 जून को धर्मनगरी पिपाड़ सिटी में आचार्य देव एवं उपाध्याय म. आदि ठाणा 10 के जयकाल भवन में पधारना हुआ। स्थानक के पास ही संत श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा.एवं श्री टीकमचंद जी म.सा. के दर्शन पधारने हेतुश्री पप्पू सा चैन्नई, श्री मोहम्मद सलीम भाई श्री पवन सियाल सहित कई लोगों का सहकारअत्यन्त सराहनीय था। अनेक स्कूलों कॉलेजों पिछली बस्तियों में शाकाहार व्यसन मुक्ति के सफलकार्यक्रम हुये। हजारों लोगों ने शाकाहार व्यसन मुक्ति के संकल्प लिए। कईयों ने मांसाहारछोड़ दिये।

इस धरती पर सभी प्राणी को जीने का अधिकार है। जीयोऔर जीने दो यही सभी धर्मों का सार है।''

कसाई धंधा छोड़ने वाले व्यक्तियों के नाम-
● लियाकत अली S/o मो. अली जी निमाज-जैतारण ● मो. रमजान S/oमो. अली नियाज 10 वर्ष- जैतारण ● मौहम्मद कुरेशी S/o निसार कुरैशी- जैतारण ● अरसद अली S/o असफर कुरैशी-जेतारण ● इमरान कसाई S/o अ. रहीम जी कसाई-रायपुर ● अजरूद्धीन कसाई S/o सजीव जी कसाई-रायपुर ● अन्सार मो. निसार S/o मो. जी कुरैशी-जैतारण ● महमूद कुरैशी-रतलाम ● निसार कुरैशी- रतलाम ● आबिद कुरैशी- जयपुर ● अमीर खान रतलाम ● जीव दया अहिंसा शाकाहार व्यसन मुक्ति अभियान निरंतर जारी है।

– महेश नाहटा, संयोजक, कसाइयों का जीवन बदलो कार्यक्रम अनन्य महोत्सव

धर्म का रास्ता

आजकल सामान्य रूप से प्राणी धर्म से विमुख होकर धर्म से उदासीन बनता जा रहा है। इसका कारण भी स्पष्ट कांच (दर्पण) की तरह दृष्टि गोचर है। एक तरफ मान सम्मान का भूत समाज में अज्ञान (यानि शास्त्रो की जानकारी का अत्यंत आभाव)के कारण स्पष्ट दिखाई दे रहा है। पूर्व के समय में आगमों के गूढार्थ जानकार श्रावक होते थे वे उस ज्ञान को प्राप्त कर ही नहीं रहते बल्कि यथासंभव ज्यादा से ज्यादा आचरण में उतारने का प्रयास करते थे।संयुक्त परिवार, आपसी प्रेम और यहां तक जैसे चार-पांच भाई में कोई 19/20 होने पर उनको मां-बाप की शिक्षा ऐसी मिलने से वे सभी एक दूसरे को समझते और साथ लेकर चलते थे किन्तु आज वह स्थिति नहीं होने से तथा धार्मिक संस्कारों की कमी के कारण आत्मीयता में भारी कमी आ रही है अत: धार्मिक संस्कारों एवं शिक्षण का अभ्यास करना नितांत आवश्यक हो गया है जिससे एक तरफ संस्कारित एवं संयुक्त परिवार बढ़ेंगे वहीं दूसरी ओर ज्ञान वान और क्रियावान श्रावक बनेंगे जहां जानकार श्रावकों का समाज बनेगा वहां शिथिलता का वातावरण भी अपने आप कम होता रहेगा अत: प्रत्येक परिवार में स्वाध्याय को नियमित रूप से अपनाना पड़ेगा। सारांश की बात यह है कि परिवार, समाज,चतुर्विध संघादि में शांति एवं भाईचारा बढ़ाना है तो धर्म ही वह रास्ता प्रशस्त करेगा।

– रमेश चंद्र वैद जैन, पूना, महाराष्ट्र

युग पुरुष आचार्य श्री रामेश का जोधपुर मंगल पर्दापण सर्वत्र खुशी की लहर

जोधपुर-महामंदिर पावटा बी रोड़

ङ्ग'जोधाणे की धरा हुई है पवित्र पावन हुआ है गुरु राम का जो भव्य पर्दापण सजेगा फिर से अब राम दरबार भव-भव को मिटाने आये है तारणहार''

युग पुरुष, युग निर्माता, निर्लिप्त अध्यात्म योगी, वर्तमान के वर्धमान, जिन शासन की शान, साधुमार्गी संघ के प्राण, भक्तों के भगवान्, सामाजिक उत्क्रांति के उद्घोषक, आगम ज्ञाता, उत्कृष्ट क्रिया के धनी नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर बेले-बेले के तपस्वी श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा चौरड़िया भवन पावटा-बी रोड़ में सुख-शांति पूर्वक विराजमान है। 22वें तीर्थंकर भगवान अरिष्ट नेमी को याद दिलाने वाले और उन्हीं के पद चिन्हों पर चलने वाले आचार्य श्री उदय सागर जी म.सा. की जन्म भूमि सूर्य नगरी के नाम से जाना जाने वाला जोधपुर शहर इतिहास के पृष्ठों पर आज तक धर्म अध्यात्म शौर्य, वीरता, त्याग और तप की नयी कहानी स्वयं कहता है। उसी तप व साधना की भूमि का ही प्रभाव है कि हुक्म गच्छ के नवम नक्षत्र नानेश पट्टधर जिन शासन प्रद्योतक आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का इस धर्म धरा पर पुन: पर्दापण हुआ। कोरोना के इस महामारी के बीच यह चातुर्मास निश्चित रूप से अंतर्मुखी बनकर साधना की गहराई में पहुंच कर स्वयं को तराशने का अलौकिक अवसर प्रदान करेगा।

आचार्य भगवन ने असीम कृपा करके यह अनन्य महोत्सव चातुर्मास श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ को प्रदान किया है। यह चार्तुमास संघ के प्रत्येक सदस्यों का चातुर्मास है।

इस चार्तुमास को लेकर पूरे देश-विदेश में आध्यात्मिक उलास एवं उमंग का वातावरण है। संत श्री विदेह मुनि जी म.सा., सुबाहु मुनि जी म.सा. आदि संतों का पूर्व से ही जोधपुर पधारणा हो गया। वहीं शासन दीपिका श्री प्रियलक्षणा जी म.सा. आदि का दिल्ली से, शासन दीपिका श्री विकास श्री जी म.सा. आदि ठाणा का पंजाब से, शासन दीपिका श्री मंजुला श्री जी म.सा. आदि भीनासर से, शासन दीपिका श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा. बीकानेर से और शासन दीपिका श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा. आदि का इंदौर से शुभ आगमन से चतुर्विध संघ का यहां ठाठ लग गया है। शासन दीपिका श्री जागृति श्री जी म.सा. आदि ठाणा का लंबे उग्र विहार कर यहां गुरू चरणों में पधारना संभावित है। शासन दीपिका श्री प्रभात श्री जी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मास सरस्वती नगर जोधपुर में संभावित है। आचार्य भगवन का चोरड़िया भवन में अत्यन्त सादगी पूर्ण शान्त माहौल में मंगल पदार्पण 20 जून को हुआ।

आचार्य भगवन उपाध्याय भगवन के आदि के पधारने से धर्म का सुन्दर वातावरण निर्मित हो गया महापुरूषों के पावन दर्शन वन्दन सेवा सभी समुदाय के लोग निरन्तर ले रहे है। 21 जून को आचार्य श्री हीराचन्द जी म.सा. आज्ञानुवर्ती सन्त श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. आदि ठाणा आचार्य भगवन उपाध्याय भगवन के दर्शन सेवा का लाभ लिया।

जोधपुर के उपनगरों की विनती श्री चरणों में लगातार हो रही है। नागौर के परम गुरू भक्त देवी चंद जी कोठारी के निधन पर परिजन गुरू चरणों में उपस्थिति होकर आध्यात्मिक शांति प्राप्त की है। संघ के रा. पदाधिकारीगण, समता युवा संघ के रा. पदाधिकारीगण, स्थानीय पदाधिकारीगण, महामंदिर संघ के प्रमुखों ने आचार्य भगवन् के आगमन पर हर्ष व्यक्त करते हुए शासन के नियमों का पालन के साथ धर्माराधना करने का निवेदन किया। इसके पूर्व 17 जून को नांदड़ी ओम प्रकाश जी राठौड़ के निवास पर आचार्य भगवन का पधारना हुआ गुणशील आयाम से जुड़ने का संकल्प लिया गया। 18 जून को कांकरिया पौषधशाला लक्ष्मीनगर में आचार्य भगवन का जय-जयकारों से पधारना हुआ, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए जेन जैनेत्तर सभी ने दर्शन सेवा का लाभ लिया।

पूरे जोधपुर मारवाड़ सहित देश में अनन्य महोत्सव चातुर्मास को लेकर धर्म उत्साह व खुशी का माहौल है।

युग निर्माता आचार्य श्री नानेश की पावन प्रेरणा से ''गुणशील'' आयाम से जुड़ते जा रहे हैं लोग-

युग निर्माता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की एवं बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. की पावन प्रेरणा यही रही है कि जन-जन में नैतिकता, सदाचार एवं मैत्रीभाव का विकास हुआ। इस हेतु गुणशील आयाम संघ-समाज को प्रदान किया है। विभिन्न संस्थानों में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारी इस बहुआयाम से जुडते चले जा रहे है। इसी कड़ी में महापुरूषों के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर भावी के मंगल सिंह सेन, हरजी राम सरवी, गोविन्द राम, महेन्द्र (पत्रकार), कपिल शर्मा, आर.डी.सागर, महेन्द्र सिरवी, सम्पत श्रीनगर, महेन्द्र सेठिया, सुरेश भारवरिया, विक्रम सेन, बस्तीराम एवं नांदडी जोधपुर के ओमप्रकाश जी चौधरी, साहिल विश्नोई आदि अनेक लोगों ने गुणशील आयामों को स्वीकार कर एक नये युग का सूत्रपात किया है। इस अभियान को आगे बढ़ाते हुए कई लोगों ने संकल्प लिया है। व्यापारिक संस्थान और फैक्ट्रियों आदि के अधिकारी, कर्मचारियों को इस आयाम से जुड़ने के लिए रा. स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं।

– महेश नाहटा

स्थानीय महिला समितियों से अनुरोध

जैसा कि यह सर्वविदित है कि प्रबोधिनी महिला समिति का अपना मंच है। अध्यात्म, धर्म और सेवा के क्षेत्र में महिलाओं का पुरूषार्थ कदापि कमतर नही है। प्रबोधिनी के प्रकाशन का उद्देश्य है कि यह पुरूषार्थ पूरी दुनिया के सामने आए और संपूर्ण संघ-समाज के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने। इसके लिए सभी स्थानीय महिला समितियों से अनुरोध है कि इस मंच को सजाने के लिए अपने धर्म-ध्यान और सेवा संबंधी गतिविधियों का विवरण प्रबोधिनी की मेल आई डी पर भेंजे। प्रबोधिनी का आगामी अंक अगली कार्यकारिणी बैठक के समय प्रकाशित होगा, अत: आपके क्षेत्र की गतिविधियों एवं स्वयं के कार्यो का विवरण भेज दें। कृपया निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें- 1. प्रकाशन सामग्री का विवरण अतिसंक्षिप्त अर्थात टू द पाइंट लिख कर भेजें। 2. आगम-भक्ति, परिवारांजलि, विहार-सेवा व अन्य प्रवृत्तियों-आयामों से संबंधित जो भी फॉर्म स्थानीय समितियों द्वारा भरवायें जाएँगें, उनकी संख्या की जानकारी भी प्रबोधिनी में प्रकाशन हेतु भेंजे।

पता: श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
प्रधान कार्यालय: 'समता भवन', आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़,
गंगाशहर, बीकानेर- 334001 (राज.) मो.- 7231033008
प्रबोधिनी पर ई-मेल भेजने हेतु :-prabodhinims@gmail.com
सम्पादक - वीना नाहर
ईमेल आईडी :-veenanahar@hotmail.com

जैन धर्म के संस्कार और आज की स्थिति

अहिंसा परमो धर्म

जैन धर्म मे अहिंसा का बडा महत्व है छह कायों के जीवों का हनन करना पाप माना है।

पृथ्वी काय, पानी के जीव, अग्नि काय बिजली आदि, वायु काय, वनस्पति काय, त्रस काय के जीवों का उठते बैठते हलते चलते हनन होना पाप माना है।

इसीलिए जैन साधु पैदल विहार करते हैं, बिजली का उपयोग नही करते, अचित जल ही लेते हैं, भिक्षा द्वारा भोजन प्राप्त करते है, सिर आदि के बाल लोच करते हैं।

अहिंसा की पराकाष्ठा कोई जैन साधु से सीखें वनस्पति की रक्षा खातिर घास - काई पर नहीं चलते, सोते समय करवट लेने से पूर्व भी स्थान को पूंजते है कहीं कोई छोटा जीव भी हताहत न हो, यह भाव रहता है।

आज पूरा विश्व अहिंसा का महत्व समझ रहा है।

आजजो परिस्थितियां उत्पन्न हुई उसकाकारण जीवों को सताना और उन पर अत्याचार करना मुख्य वजह है।

मुखवस्त्रिका

जैन धर्म में मुखवस्त्रिका मुँहपत्ती का बडा महत्व है इसका भी एक नियत माप है जिसमें साईज 21 अंगुल लंबी, 16 अंगुल चौड़ी तथा उसके 8 पट करके मुंह पर धारण करने की परम्परा है। आज के समय में पूरा विश्व मास्क के नाम पर इस ओर बढ़ चला है।

पानी धोवन या गर्म छानकर पिये

जैन धर्म में पानी की एक बूंद में असंख्यात जीव बताएं हैं ऐसे में पानी अचित, छानकर , धोवन से एकत्र कर या गर्म कर उपयोग में लिया जाता है। आज पूरा विश्व इसी में अपनी भलाई मान रहा है।

रात्रि भोजन त्याग

रात्रि भोजन त्याग पर जैन परम्परा में विशेष जोर रहता है।सर्वविदित है। आज अच्छे से अच्छा चिकित्सा परामर्शदाता यही सलाह देता है।

हाय हल्लो छोड़िए जय जिनेन्द्र बोलिए

आज हाथ मिलाने से पूरी दुनियां तौबा कर रही है।

आत्म साधना से चरम लक्ष्य

आज जबकी पूरा विश्व त्राहिमाम् कर रहा है ऐसे में ज्यादातर मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च आदि बन्द हैं ये समझने का समय हैं कि आप स्वयं ही अपना हित व रक्षा करेंगे और कोई नहीं अपने आप को सक्षम बनाएं इस हेतु महापुरुषों का फोटो नहीं उनके विचार व ज्ञान आपका सहयोगी होगा। सामायिक, समीक्षण ध्यान, स्वाध्याय करें।

पलेवणा

जैन साधु साध्वियों को आपने पलेवण करते देखा होगा। अपने पास की आवश्यक वस्तु जैसे कपडा, पूंजणी-ओघा आदि की पलेवणा करने की परम्परा है।

आज के समय की परिस्थितियों में आप के उपयोग में आने वाली चीजों को हर दिन चेक करने, व्यवस्थित करने या सेनेटाइज करने की सलाह दी जा रही है।

जमीकंद

जमीकंद जैसे आलू,प्याज, लहसुन, अदरक आदि आदि खाना निषेध बताया गया है।

इनमें भी असंख्यात जीव बताए गए हैं, जिह्वा के स्वाद के पराधीन होकर कई जन इसमें अपना अपना मत व फायदे गिनाने लगते हैं, परन्तु ये जमीकन्द जीवों का हनन करने वाले भी हैं और इनका उपयोग कभी भी भारी दुष्परिणाम दे सकता है।

जैनिज्म जीवन जीने का सुन्दर विचार हैं। आइये 'जैनत्व' की ओर बढें पाश्चात्य की तरफ नहीं।

बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू, कोरोना इस तरह की भयंकर आपदा उन लोगों ने उत्पन्न की है जिन्होंने प्रकृति के साथ खिलवाड किया है। इनका विरोध नहीं हुआ ऐसा नहीं है पर स्वतंत्रता के नाम पर खाने की स्वतंत्रता, जीने की स्वतंत्रता के नाम पर न जाने क्या क्या किया गया ! और उसका हरजाना पूरी मानव जाति को उठाना पडा है या पड रहा है। आइये एकजुट हो अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह जैसे सिद्धान्तों पर चलें।

- अल्पेश धाकड, उदयपुर

राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती गीता जी दक का जीवन परिचय

जन्म स्थान ताल, मेवाड़

जन्म दिनांक 3.6.1975

सुश्राविका श्रीमती गीता जी दक का जन्म मेवाड़ की धरा राजस्थान ताल (वाया देवगढ़ मदारिया) में स्व. श्रीमान् पारसमल जी गन्ना के घर आंगन में मातृ श्रीमती सुशीलाबाई जी की रत्न कुक्षी से हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा भारत के उभरते महानगर, प्ज्ठज नगरी, फूलों की नगरी बैंगलोर में हुई। शिक्षा ग्रहण के बाद आपका मंगल परिणय सन् 1994 में (राजस्थान) भीम निवासी (हाल में बैंगलोर) श्री संघ के आजीवन कर्मठ सदस्य स्व. श्री सुखलाल जी दक, स्व. श्रीमती मोहनकंवर जी दक के छोटे रत्न श्री सम्पतलाल जी के साथ सम्पन्न हुआ।

आपके एक जेठ श्री अशोक कुमार जी-सीता देवी जी दक है। आपके एक पुत्री समता जी दक एवं एक पुत्र गौरव जी दक हैं। देव गुरु धर्म के प्रति आस्था रखते हुए आप संघ समर्पित महिला रत्ना हैं। आपका पीहर पक्ष एवं ससुराल पक्ष दोनों ही ज्ञान-ध्यान से ओत-प्रोत है। आपका पीहर पक्ष में रहते हुए श्रमण संघ से जुड़ाव था लेकिन ससुराल पक्ष में आपके ससुरजी श्री संघ के कार्यो में समर्पित एवं निष्ठावान थे। आप भी गत कार्यकाल में कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल की रा. मंत्री पद पर सुशोभित हुई। वर्तमान में आप बैंगलोर महिला मंडल के मंत्री पद को सुशोभित कर रही हैं।

बैंगलोर चातुर्मास में आपकी सेवाओं और समर्पणा को कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है। आप समय-समय पर तन-मन-धन से निष्काम सेवायें प्रदान कर रही है। आप 8, 5 तेला-बेला एवं छोटी-छोटी तपस्याएं करती रही हैं। आपके पति (सम्पत जी) भी स्थानीय युवा संघ के उपाध्यक्ष पद पर सेवा दे चुके हैं। तपस्या आपके संयमित जीवन की विशेषता को परिलक्षित करता है। महिला समिति में महामंत्री पद पर आपका मनोनयन एक दूरदर्शी निर्णय है जो विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा।

घोर तपस्वी राज पूज्य श्री अशोक मुनि म.सा.

शासनदीपक, घोर तपस्वी, मासक्षमन शिरोमणि श्री अशोक मुनि जी म.सा. के 95 वें मासक्षमन में आज 18 उपवास की तपस्या है।

आचार्य श्री नानेश जन्म शताब्दी अनन्य महोत्सव 2020

दांता का अनुपम पोखरना वंश की शान
माँ श्रृंगारा देवी व पिता मोडीलाल जी का कोहिनूर हीरा
हुक्म संघ के युग दृष्टा आगम पुरुष आचार्य श्री नानेश
विश्व मंगल के परम पावन युक्त भास्कर
समता सरोवर के राजहंस अहिंसा के पुजारी
मानवता के मसीहा, वात्सल्य वारिधि
विषमता के घोर तिमिर में समता का दिनमान
दिखाने वाले आत्मविजेता आचार्य श्री नानेश
यह जीवनी उस महापुरुष की है जो भगवान महावीर के जीवन
दर्शन में अगाध विश्वास रखते थे, विश्वास में नहीं उस पर
आचरण करना अपना जीवन ध्येय समझकर अपनी जीवन
चर्या में भगवान महावीर के सिद्धान्तों का पूर्ण रूपेण पालन किया
पूज्य गुरुदेव का जीवन असीम विशेषताओं का पुंज था
गुरुदेव के गुणों का अकीर्तन करने से जीवन में सद्गुणों
की अभिवृद्धि होती है, विन्रमता के साथ विद्वत्ता, सरलता
के साथ प्रसन्नता सबके प्रति वत्सलता, सेवा, सरलता

समता की प्रतिमूर्ति, समीक्षण ध्यान की जागृति जगाने वाले
धर्मपाल प्रतिबोधक, व्यसनमुक्ति के संस्कारदाता
संयम के ज्ञाता, ध्याता व विधाता थे वचन सिद्धि
प्राप्त थी चरण रज में अद्भुत शक्ति, दीक्षाओं का ठाठ लगाया
कई प्रान्तों में जिन शासन का ध्वज फहराया जिणधम्मो
व समता दर्शन और व्यवहार आपका अनुपम साहित्य
जीवन भर की उत्कृष्ट साधना का प्रतिफल अंतिम समय
संथारा सुरक्षा कवच बनना
जौहरी बनकर हीरा परखा, गुरु राम को तुमने निरखा
राम बने है नाना सरीखे, इनको पाकर जग सारा है हमारा
जो समता का दीप जलाया है कभी नहीं बुझने देंगे
युगपुरूष थे नाना तुमने तो राम अपने जैसा बनाया
हुक्म क्षितिज पर सदा रहेगा अंकित नाना तेरा नाम
इस महानायक की कहानी दुनिया सतत् कहती रहेगी
सदा जलेगी यह धर्म संघ की मशाल
जो तुमने आचार्य श्री रामेश को थमाई
तेरे दिव्य आदर्शों की झांकी हम गुरु राम में पायेंगे

साधना के महाशिखर पर चढते रहो सदा आचार्य भगवन
हर दिल, हर साँस पुकार कहे तुम्हें हे आचार्य भगवन
सूर्य से भी तेज चमकते रहो तुम सदा
नाना राम को देखो, मानव में भगवान मिलेगा
जन्म शताब्दी पर सकल संघ की भावांजलि

– रंजना सूर्या, इंदौर

रुकना नहीं आगे बढ़ते जाना

रुकना नहीं आगे बढ़ते जाना,
चाहे विपत्ति हो कितनी बड़ी मनुज तू आगे बढ़ते जाना।
हर मुश्किल को हल करके, अपने पराक्रम को बड़ा करके,
रुकना नहीं आगे बढ़ते जाना
होगा भारी समस्याओं का पलड़ा, पर फिर भी तू भी वही कुरुक्षेत्र में अड़ा,
होगी तेरी ही जीत,यही दृढ़ विश्वास मेरा,
रुकना नहीं आगे बढ़ते जाना।
यह धरती है वीर सपूतों की,कर्म वीरों की,हे मानव तू स्वयं अपना भाग्य विधाता है,
रुकना नहीं आगे बढ़ते जाना।
हमारी ताकत यदि एक हो जाए ना बहे बैर की धारा,
तब ही जीतेगा मनुज तू हो करके एका कारा,
कोरोना से ना डरना इससे जीत कर बताना,
पर इससे पहले अपने मन के अंदर इसे हराना,
रुकना नहीं आगे बढ़ते जाना।
माना कि शत्रु बहुत शक्तिशाली है, पर तेरे अदम्य साहस के आगे ना टिकेगी
इसकी काली छाया,जागो उठो आगे बढ़ो फिर ना आएगा यह दोबारा,
करना दृढ़ संकल्प हमें, रहना अनुशासन से हमें,फिर ना आ पाएगा यह
दोबारा ,कहती **मीनू** आत्मविश्वास से,रुकना नहीं आगे बढ़ते जाना।

– मीनाक्षी पगारिया, जावरा

कोरोना से जंग

भारत देश है बहुत महान,
किंतु कोरोना ने किया है बहुत हैरान।
मेरा भारत है मेरी पहचान,
कोरोना को हराकर बचाओ जान।
यही तो है हमारी इंसानियत,
खत्म करो कोरोना की हैवानियत।
तभी तो सुखी हो पाएंगे भारतवासी,
भाग जाएगी सभी की उदासी।
आओ मिलकर नेकी का कुछ कार्य करें,
अपने भारत को जग में खुशहाल करें।
देश कोरोना से मुक्त होगा,
सबके जीवन में उमंग भरा भारत होगा।
गुणों से पूजित रोगों को हराकर बनेगी पुलकित,
धर्म और श्रद्धा से गुंजित मेरा भारत है सेवा पर अर्पित।।

–शालिनी कोठारी

कोरोना

रे मानव, कोरोना से अब क्यूँ है तू घबराया।
तब तो बेगुनाहों की हिंसा कर, क्रूरता से था मुस्कुराया।।
नहीं सुनी तूने पुकार, उन निर्दोष मूक बधिरो की।
क्षणिक स्वाद के लिए, ले ली जान उन बेचारे निरीह प्राणियों की।।
उन्हें कमजोर समझ कर, तूने की अपनी मनमानियाँ।
उसीका नतीजा देखो, आज फैली है कई बीमारियाँ।।
कभी बर्ड फ्लू कभी स्वाइन फ्लू तो कभी कोरोना जैसी महामारियाँ।
सर्वेसर्वा बनने की होड़ में, छीन ली न जाने कितनी ही जिन्दगानियाँ।।
रे प्राणी, अब तो समझ, मत कर तू ये नादानियाँ।
अपनाकर अहिंसा परमो धर्म, और गा जिओ और जीने दो की कहानियाँ।।

– मोनिका जी भूरा

ये तो सच है कि भगवान है

ये तो सच है कि हम जैन हैं, हैं मगर फिर भी अनजान हैं।
जैनों के क्या करम होते हैं। हम तो इन सब से अनजान हैं।
1. झरनों में नहाते हैं, पानी में हम रमे
वाटर पार्क के झूलो में, मन में खिले। ये तो............
दीपकों से सजे सारा घर ये मेरा
पटाखों की आवाज से मन ये खिले। ये तो............
2. शादियों में किया लाखों करोड़ो का खर्च
इस दिखावे को समझे बड़ी शान हैं।
हम तो भूल गये, कितनी हिंसा है ये
जैन खुद को कहे क्या सही बात है। ये तो.......

– गीतू खेरोदिया

"ओ पालनहारे, निर्गुण और न्यारे"

"तुमरे बिन हमरा कोई नही"
'ओ तारण हारे,'
'हुक्म गच्छ के रखवाले'
'नाना और राम गुरुवर'
'तुमरे बिन हमरा कौन यहाँ –2'

तुम हो तारक, मै तेरी दीवानी ।
तेरा और मेरा नाता है,पुराना ।
तुम करुणा सागर, मैं प्यासा दरवर।। नाना.....यहाँ।

मोह– माया ने मुझको है,घेरा।
विषयों ने लगाया है, डेरा।
थोड़ी सी मेहर, मुझ पे भी तो गर।। नाना.....यहाँ।

अनन्य महोत्सव है, आया
आगम– भक्ति का दीप तूने है जलाया,
हो मेरे ज्ञान का क्षयोपशम,
कर पाऊं तेरी अमृतवाणी का रसपान,
कृपा– सिंधु मुझ पे बरसाना गुरुवर ।। नाना.....यहाँ।

कर्म– ग्रंथ और आगम का कर रसपान,
चरित्र बने मेरा भी निर्मलवान ।
बन जाऊँ मैं भी तुझ जैसा,
तू ही लगादे नैया पार ।।नाना.....यहाँ।

समतामय बने मेरा जीवन,
राग– द्वेष को छोड़,
वीतराग मैं बन जाऊं
ले लो अपनी शरण मुझे।। नाना.....यहाँ।

'प्रिंसी' ये लगाए तराना,
तेरे चरणों में झुकता जमाना ।
मिट जाए हमरे, जन्मों के बंधन।। नाना.....यहाँ।

– प्रिंसी डुंगरवाल

तुम कितनी अच्छी हो

तुम कितने अच्छे हो
तुम कितने सच्चे हो
आगम ज्ञाता हो गुरु राम मेरे राम....2
ये जो दुनिया है, ये वन है काँटों का, तुम फुलवारी हो
गुरु राम, मेरे राम......2
चमकन लागा है गुरु तेरा शासन (2)
गुण गौरव गायेंगे हम (2) सारा सारा जीवन
तेरे चरणों में, मेरी सेवा है, कृपा कर देना
गुरु राम मेरे राम........
गुरु भक्तों को धर्म सुनाते.....(2)
तिणाणं और तारयाणं, सीखे और सिखाते
मेरी शक्ति में, तेरी भक्ति है, झोली भर देना
गुरु राम मेरे राम......
गुरु भक्तों की जान होते हैं.....2
वो होते हैं किस्मत वाले जिनके गुरू होते हैं
गुरु बाती है, गुरु दीपक है, ज्योति भर देना
गुरु राम मेरे राम......2

– आरती रांका, चैन्नई

युग निर्माता आचार्य श्री रामेश जी के पावन दर्शनार्थ राज्य सभा सांसद जोधपुर के श्री राजेन्द्र जी गहलोत उपस्थित हुए संघ प्रमुखों ने साहित्य भेंटकर चातुर्मास कार्यालय में बहुमान किया

एक संस्मरण

अंधकार में आशा की किरण

रतलाम– मैं दिसम्बर महीने से स्पाईन के दर्द से परेशान थी। इन्दौर से काफी इलाज किया, लेकिन आराम नहीं हो रहा था। कोरोना संक्रमण को रोकने के लिये मोदी सरकार ने लॉकडाउन किया। इधर दिन पर दिन मेरी तकलीफ बढ़ती रही थी। परिचित पूजा जी कटारिया ने कुछ माह पूर्व बॉम्बे डॉ. कुलकर्णी जी से स्पाइन का ऑपरेशन करवाया था उनसे चर्चा करी। सारी जानकारी अमेरिका में मेरे जीजाजी डॉ. हडपावत जी को बताई। उन्होंने डॉ. कुलकर्णी जी को सर्च किया व एम.आर.आई की रिपोर्ट भेजकर उनसे चर्चा की। फिर हमें बोला कि डॉ. अच्छा है, और इसका ऑपरेशन के अलावा कोई रास्ता नहीं हैं। डॉ. देखने के लिये तैयार है। अत: आप बॉम्बे चले जाओ।

बॉम्बे जाना कैसे सम्भव होगा। परिवार के सभी लोग घबरा रहे थे। इस संक्रमण से बचना व ऑपरेशन करवाना। यह निर्णय लेना हमारी सोच के बाहर था।

7 अप्रैल को आचार्य श्री के जन्म दिवस पर उनका स्मरण किया व मन में सोचा कि आप हमारा जैसा मन बनाओगे वैसा हम निर्णय कर लेंगे। भाई महेश जी नाहटा से बोलकर गुरूदेव की मांगलिक हेतु निवेदन कराया, वैसे ही हमें एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। सुपुत्र मनीष पिरोदिया ने बॉम्बे साथ चलने की हिम्मत दिखाई। 8 अप्रैल को पास बनवाया व आचार्य श्री को स्मरण किया एवं शासन दीपिका श्री ज्ञान कुंवर जी म.सा. के दर्शन वंदन कर मांगलिक लेकर बॉम्बे के लिये रवाना हो गए। पूरा रास्ता वीरान नजर आ रहा था, जगह–जगह चेंकिग हो रही थी।

9 अप्रैल को बॉम्बे हॉस्पिटल पहुंच गए। 11 अप्रैल को ऑपरेशन हुआ व 13 अप्रैल को छुट्‌टी हो गई। बॉम्बे से रतलाम आने के लिये पास नहीं मिल रहा था, आवेदन को रिजेक्ट कर दिया। अब क्या करें? अगर आप गए तो पासपोर्ट जब्त हो जाएगा व धारा लग जायेगी। इन्दौर परिचित से बोलकर होटल में रूम बुक करवा लिया।

जैसे–तैसे परिचित के यहां से टिफिन लेने गए तो उनका बताया कि हमारा आवेदन रिजेक्ट हो गया। परिचित के दोस्त का कलेक्टर से परिचय था, उन्होंने हमें महाराष्ट्र की बॉर्डर तक अनुमति दे दी। फिर हमें नई ऊर्जा मिली। नासिक में किसी परिचित से बोलकर जैन मन्दिर में रात्रि विश्राम किया। अब महाराष्ट्र की बार्डर से एम.पी. की बॉर्डर की चिंता लग रही थी, संयोग ऐसा मिला कि वहां से पुलिस ऑफिसर को सेंधवा जाना था, उन्होंने अपने साथ चलने का बोला तो ऐसा लगा, जैसे भगवान हमारे साथ बिराजे हैं। उतरते वक्त हमसे बोला कि कुछ परेशानी आए तो मेरी बात करवा देना।

जैसे–तैसे रतलाम पहंचे। फिर तीन दिन बाद बॉम्बे से डा.सा. का फोन आया कि असिस्टेंट डा. को कोरोना पॉजिटिव आया है, आप भी टेस्ट करवा लो। अब तो पूरा परिवार घबरा गया, अब क्या होगा। टेस्ट के लिये जिला हॉस्पिटल गए तो टेस्ट का पार्सल पैक हो गया। जिसने स्क्रीनिंग करी वो परिचित थे। तो 14 दिन क्वारंटाइन में जाना पड़ेगा, अच्छा है आप होम क्वारंटाइन हो जाओ। हमने ऐसा ही किया।

इस कोरोना की जंग में सुपुत्र मनीष पिरोदिया ने अपनी मां के लिये श्रवण कुमार जैसा कार्य करके दिखाया। जब हमारी जंग पूरी हुई तो हमको बोला कि मैंने मौत को नजदीक से देखा है। मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है। यह दिन मेरी जिंदगी में अविस्मरणीय समय रहेगा।

यह सब आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की ही कृपा है कि जहां भी विघ्न आए सभी टलते गए। लॉकडाउन के दौरान इस जंग में सभी के सहयोग से हमें नई ऊर्जा मिलती गई और अंतत: मैं और मेरा परिवार सफल रहा।

गुरु का आशीर्वाद हो तो, हारे हुए भी जीत जाते हैं।
मुसीबतें भाग जाती है,
अंधकार में भी आशा की किरण जग जाती है।

सरोज पिरोदिया, रतलाम

श्रेष्ठा नारी

परिवार सृष्टि की मूल इकाई है। इस इकाई का निर्माण नारी–नर की युति से होता है। यह युति ही विस्तार पाकर परिवार,समाज,राष्ट्र और विश्वरूप को साकार करती है। नारी की परिवार व समाज,राष्ट्र व विश्व निर्माण में एक अहम भूमिका होती है।सृष्टि के उद्‌भव से ही नारी की भूमिका अक्षुण्ण है। वह सृजनकर्ता है,इस गुण के अभाव में मानवता के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती है, जैसे–

नारी निंदा न कीजिए, नारी नर की खान ।
नारी से नर होत है, प्रह्लाद समान ।।

युगों–युगों से नारी को सीता, सावित्री, मीरा आदि के उज्वल चरित्र के रूप में देखा गया हैं।तो वही नारी दुर्गा के रूप में शक्ति की प्रेरक, लक्ष्मी के रूप में अर्थ की स्वामिनी एवं सरस्वती के रूप में बुद्धि की धनी दिखाई देती हैं।

नारी में चंद्र सी शीतलता, सूर्य सा तेज,समुद्र सी गहनता, पृथ्वी सी सहनशीलता जैसे गुणों से गुणी होने के कारण ही वह श्रेष्ठा कहलाती है।

वह कुशल चिकित्सक, इंजीनियर, प्रशासक, वैज्ञानिक, खिलाड़ी ,उद्यमी है, तो वह खेतिहर मजदूर भी है, कामकाजी महिला होते हुए भी वह घर– गृहस्थी के सभी कार्यों का संपादन बड़ी कुशलतापूर्वक करती है इसीलिए उसे श्रेष्ठा भी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

– श्रीमती सीमा भंडारी, मंदसौर

कुछ बातें काम की

- दिल जीतता है दिमाग हारता है।
- अपने मालिक पर भरोसा रख
- असफलता के पांच अक्षरों में सफलता के चार अक्षर भी होते है।
- आधे दिल से किया गया काम सदैव विफल होता है।
- भाग्य उन्हीं का साथ देता है। जो अपनी मदद खुद कर सकते है।
- जीतने वाले कोई अलग काम नहीं करते है। हर काम अलग ढंग से करते है।
- अगर हमनें आत्मविश्वास खोया तो दुनिया हमारे खिलाफ हो जायेगी।
- आप अद्वितीय है पर याद रखें कि बाकी सब लोग भी बेमिसाल है।
- लगातार अच्छी से अच्छी सोच को बढ़ावा मिलता है।
- जो काम आज कर सकते हे। उसे कल पर कभी न टालें।
- मनुष्य के व्यक्तित्व की पहचान उसकी संगति से होती है।
- किसी की चार दिन की जिंदगी सौ काम करती है और किसी का सौ बरस का जीना बेकार होता है।
- बनना हो तो दरिया की तरह बनो जिसे हुनर मालूम है कि जिस तरफ निकलेंगे उधर रास्ता बना लेंगे।
- तुम्हारी पसंदीदा एक मात्र अच्छाई हो।

– महेश नाहटा

इम्यूनिटी सिस्टम......

कोई भी वायरस आपको मारना कभी भी नहीं चाहता। वो बस अपने लिए आपके शरीर में जगह बना कर रखना चाहता है।

कोरोना महामारी के बाद....! लॉकडाउन व खुद को घर में कैद करके रखना, इस वायरस का सही इलाज नहीं है।

मार्च में जब खुद को कैद किया था, तो केवल गिने चुने केस ही थे। आज 246000 से ज्यादा है, और आगे कुछ महीनों में हो सकता है कि आंकड़े लाखों में हो। घबराने से काम नहीं चलेगा, सतर्कता व समझदारी अब जरूरी है।

विज्ञान कहता है कि अगर किसी बच्चे को उसके जन्म से लेकर जवानी तक किसी ऐसी जगह रखा जाए, जहां उसे कभी जुकाम, खांसी, बुखार ना हो तो एक समय बाद उसके शरीर को यदि जुकाम भी हो गया, तो उसकी सीधा मौत होगी। इसलिये इंसान को अपने शरीर को comfort zone में नहीं रखना चाहिए अन्यथा वह उसका आदी हो जाता है।

सोचिए!

जिस जुकाम, खांसी को हम या हमारे बच्चे साल में 8-10 बार आराम से होने देते हैं, वो ही किसी की मौत का कारण भी बन सकता है।

तो घर में दुबक कर रहना एक टाइम तक तो सुरक्षित लग सकता है, लेकिन कल को यही वायरस आपके घर पर भी आ सकता है।

तो सही तरीका क्या है ?

सही तरीका है खुद के शरीर को, अपने परिवारजन को, अपने बच्चों को इसके लिए तैयार करना। आज नहीं तो कल हम सब को बाहर निकलना ही पड़ेगा। चाहे मजबूरी में ही सही।

तो आइए इस समय अपनी और अपने बच्चो के शरीर की इम्यून सिस्टम को मजबूत करें। अगर हम उनको सदा के लिए सुरक्षित रखना चाहते है तो!

कुछ सुझाव

1. 30 - 60 मिनट प्रतिदिन व्यायाम व योग का नियम बनाएं। उम्र कोई भी हो आपकी। खुद के लिए इतना तो कर ही सकते हो।
2. खुद को और अपने बच्चों को ज्यादा से ज्यादा शारीरिक मेहनत की आदत डाल लें। मशीनों की बजाय खुद के शरीर पर विश्वास रखें।
3. पैदल चलना, साइकिल चलाना, सीढ़ी चढ़ने की आदत अब अच्छी आदत में शुमार हो गई है। कार, स्कूटर का लालच दूर रखें।
4. धूप में सारे विटामिन और जीवन के लिए जरूरी तत्व हैं।
5. प्रकृति से जुड़ाव करना होगा।
6. गर्म पानी का सेवन करने की आदत डालें।
7. जिन आंवला, अदरक, नीबू, गिलोय, फल, सलाद, अंकुरित अनाज, आयुर्वेदिक खाद्य जैसी कुदरती चीजों को हम पैक्ड व जंक फूड के चलते भूल गए थे, उनको ही अब अपने आहार में शामिल करना जरूरी है। आज सभी डॉक्टर व रिसर्च बोल रहे हैं कि इनका उपयोग करो।

बच्चों को सुरक्षित भविष्य देना सही है, परन्तु उनकी आदत में हद से ज्यादा सुविधा नहीं देनी है। खुद करके आगे बढ़ने की प्रेरणा देना जरूरी है। बच्चों की दैनिक दिनचर्या पर ध्यान देना होगा।

आज नहीं तो कल आप सब को घर से बाहर निकलना ही पड़ेगा। तो अपनी शरीर की प्रकृति के हिसाब से खुद के Immune system को मजबूत कीजिए।

खुद को शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत करना ही, सिर्फ इस वायरस से ही नहीं, बल्कि हर बीमारी से बचने का सही हल है।

भारती जैन, भीलवाडा

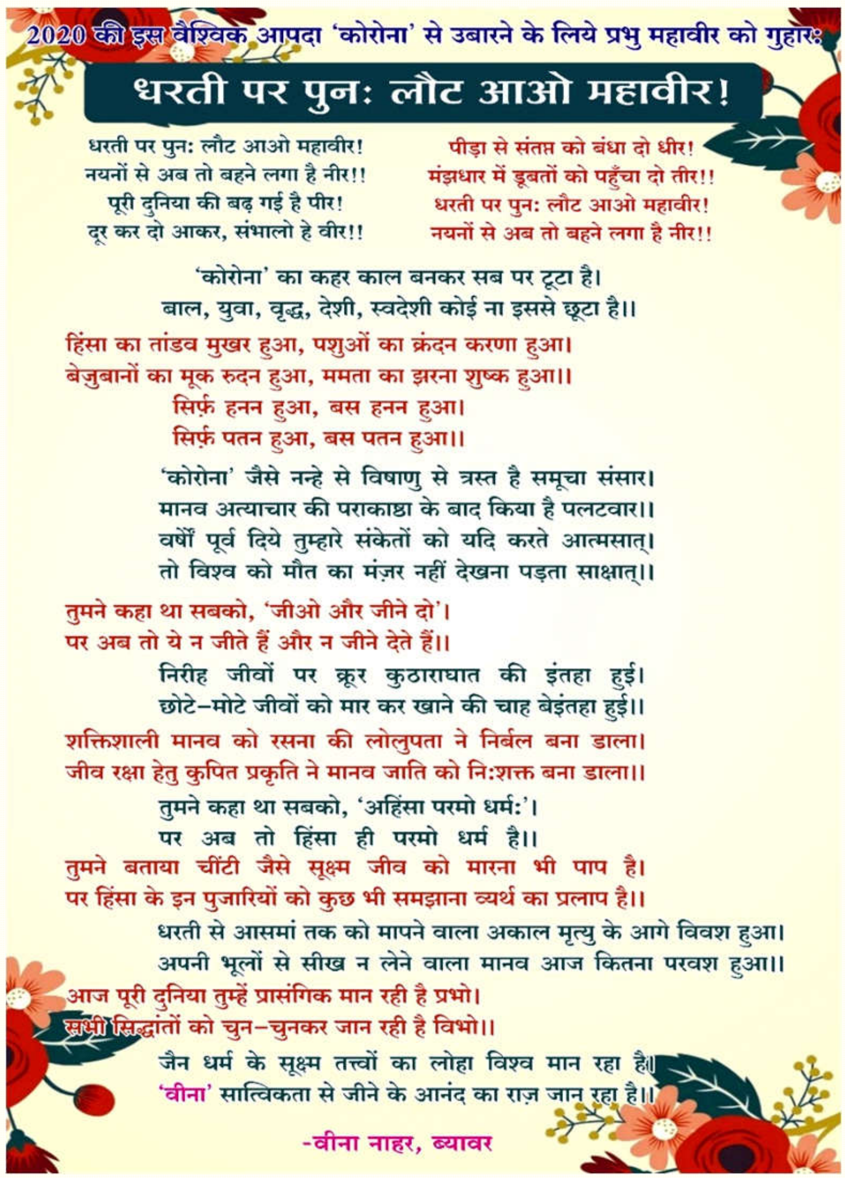
2020 की इस वैश्विक आपदा 'कोरोना' से उबारने के लिये प्रभु महावीर को गुहार:

धरती पर पुनः लौट आओ महावीर!

धरती पर पुनः लौट आओ महावीर!
नयनों से अब तो बहने लगा है नीर!!
पूरी दुनिया की बढ़ गई है पीर!
दूर कर दो आकर, संभालो हे वीर!!

पीड़ा से संतप्त को बंधा दो धीर!
मंझधार में डूबतों को पहुँचा दो तीर!!
धरती पर पुनः लौट आओ महावीर!
नयनों से अब तो बहने लगा है नीर!!

'कोरोना' का कहर काल बनकर सब पर टूटा है।
बाल, युवा, वृद्ध, देशी, स्वदेशी कोई ना इससे छूटा है।।
हिंसा का तांडव मुखर हुआ, पशुओं का क्रंदन करणा हुआ।
बेजुबानों का मूक रुदन हुआ, ममता का झरना शुष्क हुआ।।
सिर्फ़ हनन हुआ, बस हनन हुआ।
सिर्फ़ पतन हुआ, बस पतन हुआ।।
'कोरोना' जैसे नन्हे से विषाणु से त्रस्त है समूचा संसार।
मानव अत्याचार की पराकाष्ठा के बाद किया है पलटवार।।
वर्षों पूर्व दिये तुम्हारे संकेतों को यदि करते आत्मसात्।
तो विश्व को मौत का मंज़र नहीं देखना पड़ता साक्षात्।।
तुमने कहा था सबको, 'जीओ और जीने दो'।
पर अब तो ये न जीते हैं और न जीने देते हैं।।
निरीह जीवों पर क्रूर कुठाराघात की इंतहा हुई।
छोटे-मोटे जीवों को मार कर खाने की चाह बेइंतहा हुई।।
शक्तिशाली मानव को रसना की लोलुपता ने निर्बल बना डाला।
जीव रक्षा हेतु कुपित प्रकृति ने मानव जाति को निःशक्त बना डाला।।
तुमने कहा था सबको, 'अहिंसा परमो धर्मः'।
पर अब तो हिंसा ही परमो धर्म है।।
तुमने बताया चींटी जैसे सूक्ष्म जीव को मारना भी पाप है।
पर हिंसा के इन पुजारियों को कुछ भी समझाना व्यर्थ का प्रलाप है।।
धरती से आसमां तक को मापने वाला अकाल मृत्यु के आगे विवश हुआ।
अपनी भूलों से सीख न लेने वाला मानव आज कितना परवश हुआ।।
आज पूरी दुनिया तुम्हें प्रासंगिक मान रही है प्रभो।
सभी सिद्धांतों को चुन-चुनकर जान रही है विभो।।
जैन धर्म के सूक्ष्म तत्त्वों का लोहा विश्व मान रहा है।
'वीना' सात्विकता से जीने के आनंद का राज़ जान रहा है।।

-वीना नाहर, ब्यावर

बीकानेर में श्री अ.भा.सा जैन महिला समिति की नंदा जी कर्णावट की अध्यक्षता में प्रथम कार्यकारिणी बैठक आयोजित

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती नंदा जी कर्णावट की अध्यक्षता में प्रथम कार्यकारिणी बैठक बीकानेर में दिनांक 21दिसम्बर 2019 को आयोजित की गई। बैठक की शुरुआत तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, उत्क्रांति प्रणेता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत वाचानाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनि जी म.सा. एवं सभी चारित्र आत्माओं के चरणों में वंदन करते हुए चंदनबाला जी लूणिया द्वारा मांगलिक श्रवण करवाकर की गई। तत्पश्चात् बीकानेर मारवाड़ अंचल की रा. उपाध्यक्षा नीतू जी मुणोत द्वारा निवर्तमान रा. महामंत्री सुरेखा जी सांड़, नव-निर्वाचित रा. अध्यक्षा नंदा जी कर्णावट, नव-निर्वाचित रा. महामंत्री गीता जी दक एवं नव-निर्वाचित रा. कोषाध्यक्ष सुमन जी सुराणा को मंच पर आमंत्रित किया साथ ही निवर्तमान रा. अध्यक्षा प्रभा जी देशलहरा के शारीरिक अस्वस्थता होने के कारण सभी के द्वारा शारीरिक स्वस्थता की मंगलकामना की गई। रा. महामंत्री गीता जी दक के नेतृत्व में नवकार मंत्र एवं संघ समर्पणा गीत का वाचन किया गया। रा. अध्यक्ष नंदा जी कर्नावट द्वारा सभा में साधुमार्गी संकल्प सूत्र का वाचन करवाया गया।

बैठक को आगे बढ़ाते हुए रा. महामंत्री द्वारा महिला समिति के 52 वर्षो की यात्रा को बताया गया और महिला समिति एक बगीचे की तरह है। इसके बाद रा. अध्यक्षा प्रभा जी देशलहरा की अध्यक्षता में सूर्यनगरी जोधपुर में आयोजित आठवीं कार्यकारिणी मीटिंग की पुष्टि की गई। सभी को मिलकर महिला समिति को आगे बढ़ाना है, इसका आह्वान किया गया।

इसके बाद रा. महामंत्री द्वारा रा. अध्यक्षा नंदा जी कर्णावट को आमंत्रित किया गया। नंदा जी कर्णावट द्वारा बताया गया कि आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की जन्म शताब्दी वर्ष ''अनन्य महोत्सव'' का अवसर हमें प्राप्त हुआ। इसके लिए हम सभी को इसके अंतर्गत आचार्य श्री रामेश द्वारा प्रदान की गई सभी प्रवृत्तियों को सक्रिय रूप से जन-जन तक पहुँचाना है। आचार्य प्रवर द्वारा दिये गये आयामों को हमें हमारी टीम के साथ अनुशासन, नियमित एवं रूपरेखा के साथ आगे बढ़ाना है। सोच एवं कार्य का संचय जब एक दिशा में होता है तब उसका परिणाम फलदायक बनता है। रा. अध्यक्षा द्वारा अपने ढ़ाई महीने में किये अनन्य प्रवास के दौरान जो अनुभव मिला उन अनुभवों को सभी को बताया गया। इसके बाद महिला समति की प्रवृत्तियों की जानकारी दी गई और साथ ही तीन नई प्रवृत्तियों को जोड़ा गया जिनके नाम इस प्रकार है-

1. संगठन। 2. युवती शक्ति। 3. प्रोफेशनल फोरम।

तीनों प्रवृत्तियों की जानकारी सदन में ब्लू प्रिंट एवं पी.पी.टी के माध्यम से दी गई और सभी की सहमति से आगे बढ़ाने का प्रयास किया जायेगा। कार्य एवं कार्यप्रणाली तभी अपने लक्ष्य तक पहुँचती है जब उसका रोड़ मैप बना हुआ हो। एक सोच, एक दिशा, एक प्लान बनाकर एक क्लीयर रोड़ दिखना संभव है। अंत में सभी से प्रेम सहयोग प्राप्ति की कामना की गई।

तत्पश्चात् रा. महामंत्री द्वारा वीर पुत्र, वीर पिता श्रीमान् निर्मल जी सिंघवी को आमंत्रित किया गया। निर्मल जी सिंघवी द्वारा राम गुरु को स्मरण करते हुए नंदा जी को धन्यवाद दिया गया। साथ ही महिला समिति की पूर्व अध्यक्षा विजिया देवी जी सुराणा, रायपुर को नमन किया गया क्योंकि उनकी दीक्षा सुविजेता श्री जी म.सा. के रूप में हुई और संथारा लेकर वो मोक्ष को प्राप्त हुई। इसके बाद वीर पिता निर्मल जी सिंघवी द्वारा महिला समिति की किताब **Blue Print** पर चर्चा की गई। **Blue Print** किताब सभी की समस्या को हल करेगी। हम सबको संघ का काम करना है और सभी एक दिशा में मिलकर चलते है तब हम बड़े से बड़ा काम कर सकते है। इसके लिए हमें यह जानना बहुत जरूरी है कि हमें क्या काम करना है, काम को कब करना है, कैसे करना है यदि हम यह जान गए तो हम एक दिशा में जायेगे। हम उसी दिशा में चलेंगे जिस पर हमारे आचार्य राम चल रहे है और हमारे तीर्थंकर देव का शासन चल है। इसके बाद **Blue Print Book** को **Step By Step** सभी को समझाया गया। रा. महामंत्री द्वारा निर्मल जी सिंघवी का सभी के भीतर सकारात्मक ऊर्जा भरने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

इसके बाद रा. महामंत्री द्वारा रा. कोषाध्यक्षा सुमन जी सुराणा को आमंत्रित किया गया। सुमन जी सुराणा द्वारा नई प्रवृत्ति संगठन, युवती शक्ति एवं प्रोफेशनल फोरम की विस्तृत जानकारी दी गई। तीनों नई प्रवृत्तियों की प्रक्रिया को चार्ट के माध्यम से सभी को समझाया गया। साथ ही तीनों प्रवृत्तियों को सदन द्वारा सर्वानुमति दी गई। साथ ही नव-निर्वाचित रा. उपाध्यक्ष/मंत्री एवं कार्यकारिणी सदस्याओं को रसीद बुक भरने का तरीका बताया। रा. कोषाध्यक्षा द्वारा बताया गया कि दो साल में महिला समिति के ट्रैनिंग सेशन में सभी को नया अनुभव प्राप्त होगा।

तत्पश्चात् रा. अध्यक्षा द्वारा संघ एवं समिति के लिए **णमोत्थु णं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं** का ब्रोशर दिया गया। साथ ही वीडियो के माध्यम से सभी को संगठन की विशेषताएँ बताई गई। साथ ही बताया गया कि हमें संघ को निष्काम भावना से आगे बढ़ाना है। यहाँ न तेरा है न मेरा है, यहाँ सिर्फ यह हमारा है, ऐसी भावना के साथ काम करना है तभी संगठन आगे बढ़ेगा।

रा. महामंत्री द्वारा सभी को परिचय के लिए आमंत्रित किया गया। मीटिंग में उपस्थित सभी अंचल के रा. उपाध्यक्ष/मंत्री एवं कार्यकारिणी सदस्याओं द्वारा अपना-अपना परिचय दिया गया।

साथ ही रा. महामंत्री द्वारा महिला समिति की प्रवृत्तियाँ- सर्वधर्मी, केसरिया कार्यशाला, परिवारांजलि, समता छात्रवृत्ति, संगठन, युवती शक्ति एवं प्रोफेशनल फोरम के बारे में बताया गया और अनन्य महोत्सव की सभी प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। रा. परिवारांजलि संयोजिका चंदनबाला जी लूणिया द्वारा परिवारांजलि के आयाम की जानकारी दी गई। निवर्तमान रा. महामंत्री सुरेखा जी सांड द्वारा अपने कार्यकाल में हुए प्रवास के बारे में बताया गया। महिला समिति के सभी पदाधिकारियों को प्रवास में जाने से पहले किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, इसके बारे में बताया। महिला समिति एवं संघ की सभी प्रवृत्तियों के बारे में बताया। इसके बाद रा. महामंत्री गीता जी दक द्वारा अनन्य प्रवास यात्रा की जानकारी दी गई। रा. अध्यक्षा नंदा जी की उपस्थिति में मालवा, मेवाड़, मुंबई-गुजरात एवं महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल का प्रवास किया गया। प्रवास में कार सेवा के 2043, परिवारांजलि के 1267, उत्क्रांति के 597, नानेशवाणी पार्ट 2 के 177, क्विज के 90, 50 थोकड़े के 23, आगम भक्ति 1 फॉर्म भरवाये गये और 473 पच्चक्खाणं अंगूठी दी गई। इसके बार बीकानेर-मारवाड़ अंचल की रा. मंत्री श्रीमती ज्योति जी द्वारा केसरिया कार्यशाला के आगामी कार्यशाला के बारे में जानकारी दी गई।

अंत में गीता जी दक द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया और गुलाबमुनि जी म.सा. एवं महिला समिति की पूर्व रा. अध्यक्षा मीना जी रांका को चार लोगस्स के ध्यान से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बीकानेर-मारवाड़ अंचल की रा. उपाध्यक्ष नीतू जी मणोत द्वारा सभी को बीकानेर पधारने के लिए अभिनंदन किया गया।

●●●

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की द्वितीय कार्यकारिणी मीटिंग डिजिटल माध्यम के द्वारा सम्पन्न:

परमागम रहस्यज्ञाता, उत्क्रांति प्रणेत आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत वाचनाचार्य श्री राजेश मुनि जी म.सा. की असीम कृपा से वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के बीच श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की द्वितीय कार्यकारिणी बैठक दिनांक 24 अप्रैल 2020 को दोपहर 2 बजे से डिजिटल के माध्यम से सम्पन्न हुई। रा. महामंत्री गीता जी दक द्वारा मीटिंग की शुरूआत की गई। सर्वप्रथम महामंत्र नवकार का उच्चारण किया गया। इसके बाद रा. अध्यक्षा श्रीमती नंदा जी कर्नावट द्वारा सभी को संकल्प सूत्र का वाचन करवाया गया। बैठक में उपस्थित सभी पदाधिकारियों द्वारा Social Distancing को ध्यान में रखते हुए मन ही मन में संकल्प सूत्र का वाचन किया गया।

तत्पश्चात रा. महामंत्री जी द्वारा श्री अ.भा.सा जैन महिला समिति के सन् 2019-21 की राष्ट्रीय टीम को सभी से अवगत करवाया तथा दिसंबर से लेकर आयोजित प्रथम कार्यकारिणी बैठक की पुष्टि की गई। साथ ही दिसंबर से लेकर मार्च महीने तक हुए प्रवास की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रवास के दौरान परिवारांजलि, आगम भक्ति, नानेशवाणी, कार सेवा के फॉर्म भरवाए गए एवं पच्क्खाण अंगूठी वितरित की गई। प्रवास टीम के साथ मिलकर बांग्लादेश के बॉर्डर पर तैनात बी.एस.एफ के जवानों को गुरूदेव द्वारा दिये गये आयाम सकारात्मक अनन्य कार सेवा से अवगत कराया गया। दिल्ली-पंजाब में प्रवास के दौरान सकल जैन समाज की एकता देखने को मिली एवं प्रवास के दौरान लगभग सभी क्षेत्रों में चारित्रात्माओं का सान्निध्य मिला।

इसके बाद गीता जी दक द्वारा मीटिंग को आगे बढ़ाते हुए निवर्तमान रा.महामंत्री एवं संगठन की रा.संयोजिका सुरेखा जी सांड को आमंत्रित किया गया। सुरेखा जी सांड द्वारा संगठन का अर्थ बताया गया। संगठन का अर्थ है-एकता। जिस प्रकार चारित्रात्माएं छोटे-छोटे गांवों और शहरों में विचरते हुए सभी को संघ से जोड़ रहे है, इसलिए सभी एक कड़ी में पिरोने के लिए संगठन को महिला समिति में लाया गया। संगठन की संपूर्ण जानकारी महिला समिति के Blue Print किताब में दी गई। साथ ही सुरेखा जी द्वारा उपा.-मंत्री से निवेदन किया गया कि संगठन को सार्थक करने के लिए अपने अंचल से एक संयोजिका का चयन करना है। संपूर्ण देश में अभी मात्र 25 प्रतिशत महिलाएं ही समिति की सदस्यताएं है। साथ ही सुरेखा जी द्वारा एक अपील की गई कि सभी स्थानीय महिला मंडल की फीस एक समान हो। इसके लिए सभी रा.अध्यक्ष-मंत्री अपने अंचल के मंडलों में बात करके लिखित रूप में फीस की स्वीकृति देंवे। अपने अंचल के मंडलों में बात करके लिखित रूप में सभी Social Distancing को ध्यान में रखते हुए सभी कार्य पूर्ण करे। इसके बाद रा.महामंत्री गीता जी द्वारा संगठन प्रवृति को पारित करने के लिए सदन से स्वीकृति मांगी गई। तत्पश्चात् रा. परिवारांजलि संयोजिका श्रीमती चंदनबाला जी सियाल द्वारा परिवारांजलि की संपूर्ण जानकारी दी गई। साथ ही पौषधांजलि, संवरांजलि एवं विहार भक्ति पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा गया। इसके बाद केशरिया कार्यशाला की रा.संयोजिका श्रीमती पुष्पा जी मेहता को आमंत्रित किया गया। पुष्पा जी द्वारा केसरिया कार्यशाला की सुचारू रूप से रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। साथ ही केसरिया कार्यशाला को और विशेष बनाया जा सके, इसके लिए पूरे सदन से सुझाव देने को कहा गया।

इसके बाद युवति शक्ति की रा.संयोजिका श्रीमती रश्मि जी जेलमी द्वारा सभी को महिला समित की नव प्रवृति युवती शक्ति के बारे में बताया। युवती शक्ति के अंतर्गत 14 साल से लेकर अविवाहित युवतियों को संघ से जोड़ना है। युवती शक्ति की संपूर्ण जानकारी Blue Print Book में दे दी गई है। साथ ही युवती शक्ति के अंतर्गत हुई टैगलाइन Activity के बारे में बताया गया। रश्मि जी द्वारा बताया गया कि प्रवृतियों को सार्थक बनाने के लिए उसकी रिपोर्टिंग प्रक्रिया को अच्छे से करना Follow चाहिए।

इसके बाद रा.कोषाध्यक्ष एवं प्रोफेशनल फोरम की रा.संयोजिका श्रीमती सुमन जी सुराणा को आमंत्रित किया गया। सुमन जी द्वारा अंचल वार प्रोफेशनल फोरम की रिपोर्ट दी गई। और साथ ही सर्वधर्मी के 52 लाख और समता छात्रवृत्ति के लिए 10 लाख के प्रावधान के बारे में बताया गया।

इसके बाद निवर्तमान रा.अध्यक्षा एवं सर्वधर्मी की रा.संयोजिका श्रीमती प्रभा जी देशलहरा द्वारा सर्वधर्मी सहयोग की विस्तृत जानकारी दी गई। सभी से निवेदन किया कि इस वैश्विक महामारी की स्थिति में सभी सर्वधर्मी भाई-बहनों का सहयोग करें। तत्पश्चात् समता छात्रवृति संयोजिका श्रीमती नीलम जी रांका द्वारा समता छात्रवृति योजना के बारे में बताया गया। छात्रवृति के सभी नियमों को बताया तथा साथ ही प्रत्येक वर्ष लगभग 100 बच्चों को छात्रवृति से लाभान्वित किया जाना चाहिए इसके लिए पूरे सदन से अनुरोध किया गया।

इसके बाद रा.महामंत्री जी द्वारा रा.अध्यक्षा श्रीमती नंदा जी कर्नावट को आमंत्रित किया गया। नंदा जी द्वारा आचार्य प्रवर एवं उपाध्याय प्रवर का स्मरण करके बैठक में पधारे सभी पदाधिकारियों का स्वागत अभिनंदन किया गया। रा. अध्यक्षा द्वारा कहा गया कि हमें गुरू भगवन् की सोच एवं उपाध्याय प्रवर के चिंतन की प्रभावना करनी है। श्री साधुमार्गी जैन संघ की प्रत्येक प्रवृति की तीनों विभाग साथ मिलकर बढ़ा रहे है। सभी प्रवृतियों की कार्यप्रणाली द्वारा सभी तक पहुंचना हमारा दायित्व है। संघ के आई.टी. विभाग को बहुत मजबूत किया जा रहा है जिससे सभी लोगों को सही जानकारी प्राप्त हो सके। साथ ही महिला समिति की समस्त जानकारी संघ की वेबसाइट पर अपलोड करने का लक्ष्य है। कोरोना वायरस की वजह से अनन्य महोत्सव विलंब होता नजर आ रहा है लेकिन यह महोत्सव आध्यात्मिक एवं बड़े तौर से जरूर मनाया जाएगा सभी घर में रहकर ज्यादा से ज्यादा धार्मिक कार्य करें। साथ ही नंदा जी द्वारा महिला समिति को नई उंचाईयों तक लेकर जाना है, ऐसी कामना की गई। बैठक में महिला समिति के रा.पदाधिकारी, पूर्व अध्यक्षाएं, रा.उपाध्यक्ष, रा.मंत्री, रा.प्रवृति संयोजिकाएं और रा. कार्यकारिणी सदस्याओं की उपस्थिति रही।

अंत में गीता जी द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। गुरूदेव के आयामों को घर-घर तक पहुंचाना है और श्री संघ को नई उंचाईयों तक पहुंचाना है, ऐसी मंगल कामना की गई। संघ समर्पणा गीत के साथ बैठक को विराम दिया गया।

•••

विविध समाचार

मंदसौर–हम सबके आस्था के केंद्र समता की महान विभूति युगपुरुष आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब के जन्म शताब्दी अनन्य महोत्सव के अंतर्गत कोरोना वायरस संक्रमण रोकथाम के लिए साधुमार्गी संघ के अंतर्गत महिला मंडल के द्वारा 18000 रुपए एकत्रित कर दो थर्मल मशीनें प्रशासन को प्रदान की गई इन मशीनों के माध्यम से व्यक्ति का टेंपरेचर बिना हाथ लगाए मशीन के माध्यम से चेकअप किया जा सकता है। –साधना पोरवाल

समता महिला मंडल ने स्कूल में लगवाया वाटर फिल्टर

गुवाहाटी, 18 मार्च (पू.सं.)। नानेश जल सेवा के अंतर्गत समता महिला मंडल के सहयोग से नारायण नगर स्थित बद्रीदास स्कूल में 100 लीटर का वाटर फिल्टर लगाया गया। स्कूल के लगभग 900 बच्चों को इस सेवा का लाभ मिल सकेगा और उन्हें स्वच्छ जल मिलेगा। समता महिला मंडल के इस परोपकारी कार्य में श्री संघ, युवा संघ व समता महिला मंडल के लगभग 50 सदस्यों की उपस्थिति रही। शिक्षकों ने श्री संघ अध्यक्ष श्याम सिपानी, महिला अध्यक्षा श्रीमती मंजू सिपानी, समत महिला समिति की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरला बोथरा को फुलाम गमछ पहनाकर सम्मानित किया। मंत्री सरित बाफना ने शिक्षकों को आश्वासन दिय कि भविष्य में एसे कार्य करते रहेंगे। इ परोपकार के कार्य में सहयोग देने वे लिए श्री संघ, युवा संघ व महिला मंड के उपस्थित सभी सदस्यों को अध्य मंजू सिपानी ने साधुवाद दिया।

समता महिला मंडल का गठन

महामन्दिर जोधपुर धार्मिक सामाजिक और मानव सेवा कार्यो को आगे बढ़ाने हेतु समता महिला मंडल महामन्दिर जोधपुर का गठन किया गया।

जिसमें अध्यक्ष श्रीमती चन्दा देवी बैद, मंत्री श्रीमती ममता देवी पामेचा एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती रीना देवी सांखला सहित कार्यकारिणी सदस्य के रूप में श्रीमती ललिता देवी कोटड़िया, सीमा देवी चौपड़ा, किरण देवी दुग्गड़, वर्षिका देवी चौपड़ा, सरिता देवी छाजेड़ आदि लिये गये है। 2020 अनन्य चातुर्मास आचार्य श्री रामेश के महामन्दिर परीसर चातुर्मास को सफल बनाने का संकल्प सभी लोगों ने लिया है।

– ममता देवी पामेचा

अनन्य महोत्सव के तहत रक्तदान शिविर का आयोजन महामंदिर जोधपुर

साधुमार्गी जैन संघ के आचार्य श्री नानेश जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में संपूर्ण भारत में रविवार को विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसी कड़ी में सोशल डिस्टेंसिंग की पालना करते हुए जोधुपर में महामंदिर स्थित उदयसागर स्मृति समता भवन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 22 महिलाओं पुरूषों द्वारा रक्तदान किया गया। शिविर में मथुरादास माथुर अस्पताल के रक्त कोष की टीम का सहयोग रहा। कार्यक्रम के संयोजक संदेश बैद अनिल सांखला व महिला मण्डल की ओर से अध्यक्ष चन्दा बैद, ममता पामेचा, शर्मिला चौरड़िया के साथ समस्त कार्यकर्त्ताओ का पूर्ण सहयोग रहा रक्तदान करने वालों में अजित चौरड़िया, शुभम बैद, सन्तोष कुमार, शैलेन्द्र नागोरी, सन्देश बैद, खुशाल कोठारी, भावेश सांखला, सुधीर जैन, नरेश जैन, दिनेश जैन महावीर रौनक लोढ़ा, सुनील लोढ़ा, मुकेश कुमार, राजकुमार, सीमा बोथरा, शिल्पी जैन, नीलमचन्द छाजेड,. अनमोल छाजेड़, पवन छाजेड़ ने रक्तदान किया। अन्त में रक्तदान सेवा समिति के अध्यक्ष रक्तदाता तरूण कटारिया ने रक्तदाताओं एवं आयोजको को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बताया कि रक्त थैलेसीमिया रोग से पीड़ित बच्चों को नि:शुल्क उपलब्ध करवाया जायेगा। – महेश नाहटा

ब्यावर की एक रिपोर्ट

होली चातुर्मास पर ब्यावर में 9 संत व 27 महासतियाँजी म.सा. विराजमान थे। त्रि-दिवसीय कार्यक्रम में 8 ता. को भजन प्रतियोगिता, 9 ता. को प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, 10 ता. को संवर दिवस पर भाई-बहनों में 50 उपवास, 70 संवर, 50 पौषध एवं तेलों की अराधना हुई।

24 मार्च 2020 से लॉकडाउन प्रारंभ हो गया। इसमें 15 घंटे का जाप व आयंमबिल की लड़ी प्रारंभ की गई। भ. महावीर जन्म कल्याणक दिवस व आचार्य श्री रामेश जन्म दिवस पर आदरणीय वीना जी नाहर के सतत प्रयास से घर-बैठे ऑडियो वीडियो के माध्यम से प्रतियोगिता संपन्न कराई गई। सभी प्रतियोगियों को मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। खाने के फूड पैकेट वितरित किये गये।

आचार्य श्री रामेश के जन्म दिवस पर अमृत कौर हॉस्पिटल में 100 बैडशीट व 6 नेबुलाइजर मशीन भेंट की गई।

इसी प्रकार आगम भक्ति में टॉप 12 में ब्यावर से 4 बहनों के नाम आये हैं। प्रतिक्रमण, सामायिक सूत्र में लगभग 35 बच्चों ने भाग लिया। ''नानेश ज्ञान गुण प्रतियोगिता'' में ब्यावर से बहुत से भाई-बहनों ने भाग लिया और अंचल स्तर पर अपना नाम दर्ज कराया। अनन्य महोत्सव को भी घर में बैठकर सबने सामायिक, संवर आदि भी किये व आयंबिल दिवस के रूप में मनाया गया। केसरिया कार्यशाला के तत्त्वावधान में 23 मई को केशरिया गणवेश में 100 बहनों ने लगभग 2-2 सामायिक की। अब कर कमाल का अंचल स्तर का कार्यक्रम ब्यावर में संपन्न हुआ। Lit fest में ब्यावर के 12 बच्चों ने भाग लिया नई प्रवृत्ति राष्ट्रीय युवती शक्ति एवं प्रोफेशनल फोरम का कार्य अंचल संयोजिका सिंपल जी श्रीश्रीमाल व अनीता जी मुणोत बड़ी मेहनत व लगन से संभाल रहीं हैं। ब्यावर मंडल द्वारा सर्वधर्मी सहायता कोष एवं विहार सेवा प्रवृत्ति में लगभग एक लाख की राशि बीकानेर कार्यालय में जमा करवा दी है।

शशिकला डांगी ● प्रमिला बोहरा

माता पुत्र के प्रश्न

1. उस माता का नाम बताओ जिसने अपने पुत्र को 14 विद्या का ज्ञान होने पर भी दृष्टिवाद पढ़ने मामा के पास भेजा?..............................
2. उस माता का नाम बताओ जिसने एक गाँव के लिये पुत्र को पिता के साथ लड़ते देखा?..............................
3. जन्मते पुत्र का विद्याधर द्वारा अपहरण होने पर किस माता को 16 वर्ष बाद पुत्र मिला?..............................
4. जंगल में किस माता ने पुत्र को जन्म दिया जिसका पालन पद्मरथ राजा ने किया?..............................
5. जन्मते पुत्र को किस माता ने दासी द्वारा उकरड़े में फिकवाया?..............................
6. अपने बेटे के बराबर सेना लेकर किस माता ने अपने पुत्र को बेचा?..............................
7. किस माता ने पुत्र का दीक्षोत्सव करने के लिए श्रीकृष्ण से छत्र, चामर, मुकुट आदि माँगे?..............................
8. छः वर्ष के इकलौते पुत्र को किस माता ने दीक्षा की अनुमति दी?..............................
9. 'तू मुझे छोड़कर दूसरी माता मत बनाना' वाक्य किस माता ने अपने पुत्र से कहा?..............................
10. किन-किन माताओं के नाम हमें एकेन्द्रिय का बोध कराते हैं?..............................(दो के नाम लिखिये)
11. माता के नाम प्रसिद्ध होने वाले पुत्रों के नाम? (किन्ही 3)..............................
12. किस माता-पुत्र ने एक साथ दीक्षा ग्रहण की?..............................
13. पुत्र को राज्य पुरोहित बनाने के लिये उसे अपने पिता के मित्र के पास किसने भेजा?..............................
14. किस माता की आज्ञा बिना पुत्र 12वीं समुद्र यात्रा करने गया?..............................
15. किस माता ने साध्वी अवस्था में पुत्र को जन्म दिया, जिसका श्मशान रक्षक ने पालन किया?..............................

नियम-ऊपर दिये गये प्रश्नों के उत्तर आपको इनके सामने ही लिखकर भेजने हैं। आप उत्तर भरकर निम्न पते पर पोस्ट से भेज सकते हैं। भेजने की अंतिम तिथि 05 अगस्त 2020 है। निर्णायक का निर्णय अंतिम होगा। आपका नाम, पता व मोबाईल नम्बर स्पष्ट होना चाहिये। कृपया ध्यान रखें कि प्रश्नोत्तरी जेरॉक्स करके नहीं भेजें वो मान्य नहीं होगी। आप मूल प्रति में ही भेजें।

पुरस्कार सौजन्यकर्त्ता :- **नंदा कर्नावट, बैंगलोर**

उत्तर भेजने का पता एवं सम्पर्क सूत्र :- **वीना नाहर**

ईमेल-veenanahar@hotmail.com पता- ए/12, रिको हाऊसिंग कॉलोनी, अजमेर रोड, ब्यावर- 305901 (राजस्थान)

मोबाईल नम्बर- 9950304308

भाई-भाई प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम पुरस्कार 1100/-	द्वितीय पुरस्कार 700/-	तृतीय पुरस्कार 500/-
समता जी बोथरा, अलाय	**मंजू जी भंडारी, कांकरोली**	**सुनीता जी सुराणा, सैंती वेस्ट**
9828183312	9460969275	7023226810

सांत्वना पुरस्कार

ज्योति जी जैन, इंदौर	**शशिकला जी डांगी, ब्यावर**
200/-	200/-
8319011311	9079065290

पुरस्कार सौजन्यकर्त्ता :- **सुमन सुराणा, सूरत**

सही उत्तर भाई-भाई प्रतियोगिता के

1. भवदत्त 2. मरुभूति 3. कमठ 4. चित्त संभूति, 5. वल्कलचीरी 6. संभूति मुनि 7. जिन रक्षित 8. देवभद्र यशोभद्र 9. अतिमुक्त कुमार 10. पुष्पचूल 11. कुंडरिक-पुंडरिक 12. शैलक यक्ष, 13. नमि विनमि 14. नेमिनाथ-सत्नेमि, दृढ़नेमि 15. यक्षा।

Premium Quality

JAIN SAMTA
समता महिला सेवा केन्द्र

जितना चाहे खाते जाएं

JAIN SAMTA
समता महिला सेवा केन्द्र
(अन्तर्गत : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

हमारे अन्य उत्पाद

जैन समता पापड़

पापड़
चने के मीठे व नमकीन
मूंग कम व तेज
हाथ के बने

खाखरा
विभिन्न स्वाद में उपलब्ध

पापड़ व मसालों की अग्रिम बुकिंग (Advance Booking) हेतु सम्पर्क करें

शुद्ध आहार शाकाहार

समता महिला सेवा केन्द्र, धनजीभाई का नोहरा, चांदनी चौक, रतलाम
फोन 07412-238696, मो.9407326400, 6262226400
समय - प्रात: 9 से रात्रि 8 बजे तक

शहर/ग्राम पापड़ विक्रय के लिए विक्रेता (Dealer) खुदरा विक्रेता (Retailer) नियुक्त करना है।
गृहिणियों/अन्य महिलाओं के लिए यह ऑफर (आकर्षक कमीशन) लागू है। वितरक कृपया सम्पर्क करें।